वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 371
ISBN 978-93-82071-51-8

अकृत्रिम कमलों में जिनमंदिर

–संकलनकर्त्री–

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	15 फरवरी 2013, बसंत पंचमी	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जम्बूधातकिद्वीपे, चार्धपुष्करे कृता मनुजराजाद्यैः।
सुरनरवंदितनिलयाः, स्वजन्ममरणोपशांतये वंदेऽहं।।

जैनधर्म शाश्वत धर्म है, सार्वभौम धर्म है। विदेह क्षेत्र में शाश्वत कर्मभूमि होने से वहाँ पर हमेशा चतुर्थकाल ही रहता है और हमेशा ही तीर्थंकर होते रहते हैं और आज भी भगवान के समवसरण विद्यमान हैं। लेकिन भरत और ऐरावत क्षेत्र में षट्काल परिवर्तन होने से धर्म में वृद्धि–ह्रास होता रहता है। यहाँ चतुर्थकाल में ही तीर्थंकर होते हैं और उनके समवसरण होते हैं। वर्तमान में यहाँ भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में पंचमकाल चल रहा है। आज इस पंचमकाल में यहाँ से मोक्ष नहीं जा सकते, लेकिन मोक्षमार्ग चालू है। आज भी दिगम्बर जैन साधु, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका तपश्चरण करके कर्मों को निर्जीण कर रहे हैं।

जम्बूद्वीप के अंदर निर्मित जो अकृत्रिम रचनाएँ हैं, जिन्हें हम और आप आज नहीं देख सकते हैं, मात्र शास्त्रों को पढ़कर हम उसका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आज के इस भौतिक युग में बड़े–बड़े ग्रंथों को पढ़ने का लोगों के पास समय नहीं है। छोटी–छोटी पुस्तकों को तो प्रायः यात्रा करते हुए—रेलगाड़ी, हेलीकाप्टर आदि से सफर करते हुए भी पढ़ सकते हैं। जिनागम जो कि रत्नों का पिटारा है, जिसमें बहुमूल्य रत्न भरे हुए हैं, उन्हें ढूंढ कर निकालने की आवश्यकता है और यह कार्य वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी, ब्राह्मी–सुन्दरी के मार्ग का अनुसरण करने वाली परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी कर रही हैं।

प्रस्तुत पुस्तक "अकृत्रिम कमलों में जिनमंदिर" यह जिनागम से निकला हुआ एक बहुमूल्य रत्न है, जिसे पढ़कर आप लोग अकृत्रिम रचना के बारे में जान सकते हैं और पढ़कर सातिशय पुण्य का बंध कर सकते हैं। पूज्य माताजी को तो ध्यान में साक्षात् तेरहद्वीप रचना के दर्शन हुए, दिव्यप्रकाश दिखा था। तभी तो पूज्य माताजी ने ग्रंथों से सारी जैनभूगोल की रचना को निकालकर हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना, तेरहद्वीप रचना एवं तीनलोक रचना के निर्माण से हम सभी को दर्शन, वंदन करने का सौभाग्य प्राप्त कराया है। वर्तमान में आज बड़े–बड़े विद्वान अपनी शंका का समाधान करने के लिए पूज्य माताजी के पास आते हैं। पूज्य माताजी उनकी शंकाओं का समाधान शास्त्रों के प्रमाण निकालकर देती हैं। पूज्य माताजी का स्वाध्याय इतना अधिक सर्वोपरि है कि कहाँ क्या लिखा है ? तुरंत वे शास्त्र का नाम बताकर उस पंक्ति को निकालकर दे देती हैं। साक्षात् सरस्वती की प्रतिमूर्ति पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–आर्यिका सुव्रतमती (संघस्थ)

नवशतपंचविंशति-कोट्यो लक्षास्त्रयोत्तरपंचाशच्च।
सप्तविंशतिसहस्रा-ण्यष्टचत्वारिंशद-धिकनवशतानि च।।

मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप–समुद्र हैं। सबसे पहला द्वीप जम्बूद्वीप है, जिसमें भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत ये सात क्षेत्र हैं। जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। जिसमें भरत क्षेत्र का विस्तार ५२६ (६/१९) योजन है। आज वर्तमान में उपलब्ध सारा विश्व इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में आता है।

जम्बूद्वीप में छः कुलाचल—पर्वत हैं। जिनके नाम हिमवन्, महाहिमवन्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी है। इन छः पर्वतों के ऊपर क्रम से पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक ये छह सरोवर हैं। इन सरोवरों में रत्नमयी पृथिवीकायिक कमल हैं, इन कमलों पर क्रम से श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये देवियाँ निवास करती हैं। इन देवियों के भवनों में रत्नों से निर्मित जिनमंदिर हैं। उन जिनभवनों में उत्तम चमर, भामण्डल, तीन छत्र और पुष्पवृष्टि आदि से संयुक्त जिनेन्द्र प्रतिमाएँ विराजमान हैं। श्री देवी के परिवार कमल की संख्या एक लाख चालीस हजार एक सौ पन्द्रह हैं। सभी परिवार कमल भी पृथ्वीकायिक एवं रत्नों से निर्मित हैं, इन सभी परिवार कमलों के ऊपर भी जिनभवन बने हुए हैं और इन सबमें जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। पद्म सरोवर से महापद्म सरोवर में दूने कमल एवं दूने ही जिनमंदिर हैं, तिगिञ्छ सरोवर में महापद्म सरोवर से दूने कमल एवं दूने ही जिनमंदिर हैं। इसी प्रकार धातकीखण्ड द्वीप एवं पुष्करार्धद्वीप में भी कमल और उन पर जिनमंदिर बने हैं। सब मिलाकर ढाई द्वीप में कुल छह करोड़, उन्नीस लाख, इकतीस हजार दो सौ बाहत्तर कमलों की संख्या और उतने ही जिनमंदिर की संख्या आती है। इन सभी मंदिरों में विराजमान जिनप्रतिमाओं को कोटि–कोटि नमन है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख आर्यिका–शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, जम्बूद्वीपपण्णत्ति, लोकविभाग आदि ग्रंथों का स्वाध्याय करके कमलों की एवं जिनमंदिरों की संख्या को निकालकर, परम ही आल्हाद का अनुभव करते हुए, हम सभी को भी इन अकृत्रिम रचनाओं के ज्ञान से अवगत कराया है। इन ग्रंथों के स्वाध्याय से, मनन से, चिंतन से असंख्य कर्मों की निर्जरा होती है और सातिशय पुण्य का बंध होता है।

परमपूज्य राष्ट्रगौरव, वाग्देवी, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, जैन भूगोल को धरती पर साकार कराने वाली गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें और हम सभी को अपने ज्ञान के आलोक से भरती रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान — टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि — आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१, (२२ अक्टूबर सन् १९३४)

जाति — अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र —** गोयल, **नाम —** कु. मैना

माता-पिता — श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत — ई. सन् १९५२, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा — चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम — क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा — वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व— अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग ३०० ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि — सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा ८ अप्रैल २०१२ को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा — हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा— भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ परतीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की ३१-३१ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की शिाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा — पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से २१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा — 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा — जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् १९७२ में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई १९७४ में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी १९७५ में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् १९९० में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण — जुलाई सन् १९७४ में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (१०१ फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् १९७९ में एवं सन् १९८५ में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित १३६ सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा — हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त २०० कमरे, ५० से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त २ किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ? — भारत की राजधानी दिल्ली से ११० किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से ४० किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यीय बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

१. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रीखावली, दिल्ली–६।
२. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
३. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी–१९, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
४. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
५. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
६. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
७. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली–९२।
८. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
९. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
१०. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
११. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
१२. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली–९२।
१३. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एसए.
१४. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
१५. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
१६. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
१७. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी–४, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॅनाटप्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

१. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
२. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, ७९२ विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
३. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
४. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा–सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
५. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
६. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
७. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
८. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
९. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
१०. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
११. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
१२. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा–श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
१३. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
१४. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
१५. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता–७।
१६. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
१७. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
१८. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
१९. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
२०. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
२१. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमारजैन, मेरठ।
२२. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	मंगलाचरण	१
२.	हिमवन पर्वत का पद्मसरोवर	३
३.	महाहिमवन पर्वत का महापद्म सरोवर	९
४.	निषध पर्वत पर तिगिंछ सरोवर	१०
५.	सीता–सीतोदा नदी के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर	१२
६.	हिमवन पर्वतादि के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर	१४
७.	सीता–सीतोदा नदियों के मध्य सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर	२२
८.	छह कुलाचलों के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर	२४
९.	सीता–सीतोदा नदी के सरोवरों के कमलों में जिनमंदिर	३३
१०.	हिमवन आदि पर्वतों के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर	४०
११.	सीता–सीतोदा नदी के बीस सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर	४१
१२.	धातकीखण्ड द्वीप में धातकी वृक्ष के परिवार वृक्षों की संख्या	४३
१३.	धातकीखण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप में पर्वतों का विस्तार	४४
१४.	जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड द्वीप, पुष्करार्धद्वीप में पर्वत व सरोवरों के माप	४५
१५.	जम्बूद्वीप, धातकीखण्डद्वीप, पुष्करार्धद्वीप संबंधी कमलों की संख्या	४७
१६.	ढाईद्वीप के कुल कमलों की संख्या	४९
१७.	तीर्थंकर माता की सेवा करने वाली श्री आदि देवियाँ	४९
१८.	प्रशस्ति	५०
१९.	चार्ट	५१

अकृत्रिम कमलों में जिनमंदिर

(तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथों से)

–मंगलाचरण–

श्र्यादिदेवीकमलेषु, परिवारकंजेष्वपि।
जिनालया जिनार्चाश्च, तांस्ताः स्वात्मश्रियै नुमः।।१।।

श्री आदि—ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी इनके कमलों में तथा इनके परिवार कमलों में भी जिनमंदिर हैं और जिनप्रतिमाएँ हैं। उन सभी जिनमंदिर व जिनप्रतिमाओं को हम अपनी आत्मा की श्री—लक्ष्मी—गुणसंपत्ति को प्राप्त करने के लिए नमस्कार करते हैं।।१।।

–शंभु छंद–

कमलों कमलों में जिनमंदिर, इनमें जिनप्रतिमाएँ सुंदर।
छह करोड़ उन्नीस लाख इकतीस हजार दो सौ बाहत्तर।।
मुनिगण सुरगण से वंदित ये, शाश्वत रत्नों की प्रतिमाएँ।
हम इनका वन्दन कर करके, शाश्वत अनुपम सुख पा जायें।।२।।

जम्बूद्वीप में हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी ऐसे छह कुलाचल पर्वत हैं। इनके ऊपर पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक नाम के छह सरोवर हैं। उन सरोवरों में क्रम से श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी नाम की देवियाँ अपने परिवार सहित रहती हैं।

ये श्री आदि देवियाँ जम्बूद्वीप के भरत, ऐरावत व विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों की माता की सेवा के लिए आती हैं।

उन सरोवरों में इन देवियों के जितने परिवार कमल हैं, उन सबमें जिनमंदिर हैं और सभी जिनमंदिरों में जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

इसी प्रकार 'त्रिलोकसार' ग्रंथ के अनुसार जम्बूद्वीप में सीता–सीतोदा नदी के पूर्व, पश्चिम व दक्षिण तथा उत्तर में पाँच–पाँच सरोवर ऐसे २० सरोवर हैं। उनमें भी नागकुमारी देवियों के कमल हैं। उनके परिवार कमल भी श्री देवी के परिवारकमल प्रमाण हैं। उन सभी २६ सरोवरों के कमलों में जिनमंदिर हैं, उन सभी में जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं।

जम्बूद्वीप के समान पूर्व धातकीखण्ड में श्री आदि देवियों के छह सरोवर व सीता–सीतोदा नदी के बीस सरोवर तथा पश्चिम धातकीखण्ड के भी छह और बीस सरोवर, ऐसे ही पूर्व पुष्करार्ध व पश्चिम पुष्करार्ध के छब्बीस–छब्बीस २६–२६ सरोवर सभी मिलकर २६×५=१३० सरोवर हो जाते हैं।

धातकीखण्ड द्वीप में कमलों की संख्या

तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार व लोकविभाग आदि ग्रंथों में धातकीखण्ड द्वीप के हिमवान आदि पर्वतों का विस्तार आदि दूना–दूना कहने से स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ पर सरोवरों के विस्तार भी दूने–दूने हैं तथा श्री, ह्री आदि देवियों के परिवार कमल भी दूने–दूने हैं।

ऐसे ही सीता–सीतोदा के परिवार कमलों की संख्या भी दूनी–दूनी हैं।

ऐसे ही पुष्करार्ध द्वीप में भी हिमवान पर्वत व पद्म सरोवर आदि का विस्तार भी दूना–दूना कहा गया है अतः श्री देवी आदि के परिवारकमलों की संख्या तथा सीता–सीतोदा नदियों के परिवार कमलों की संख्या भी धातकीखण्ड की अपेक्षा दूनी–दूनी है, ऐसा समझना चाहिए।

पूर्व धातकी व पश्चिम धातकी में भरत–ऐरावत व विदेह क्षेत्रों के तीर्थंकर की माता की सेवा के लिए वहीं–वहीं की श्री आदि देवियाँ आती हैं, ऐसे ही पूर्व व पश्चिम पुष्करार्ध के तीर्थंकरों की माता की सेवा के लिए वहीं–वहीं की देवियाँ आती हैं।

इन सबके कमलों की संख्या छह करोड़, उन्नीस लाख, इकतीस हजार दो सौ बहत्तर—६,१९,३१,२७२ हो जाती हैं। इन कमलों में अकृत्रिम जिनमंदिर हैं एवं सभी मंदिरों में रत्नमयी जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं।

हिमवान् पर्वत का पद्मसरोवर

(तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ से)

हिमवंतयस्स मज्झे पुव्वावरमायदो य पउमदहो।
पणसयजोयणरुंदो तद्दुगुणायामसोहिल्लो।।१६५८।।
५००।१०००।
दसजोयणाणि गहिरो चउतोरणवेदिणंदणवणेहिं।
सहिदो वियसिअकुसुमेहिं सुहसंचयरयणरचिदेहिं।।१६५९।।
वेसमणणामकूडो ईसाणे होदि पंकयदहस्स।
सिरिणिचयणामकूडो सिहिदिसभागम्हि णिद्दिट्ठो।।१६६०।।
खुल्लहिमवंतकूडो णइरिदिभागम्मि तस्स णिद्दिट्ठो।
पच्छिमउत्तरभागे कूडो एरावदो णाम।।१६६१।।
सिरिसंचयकूडो तह भाए पउमद्दहस्स उत्तरए।
एदेहिं कूडेहिं हिमवंतो पंचसिहरिणामजुदो।।१६६२।।
उववणवेदीजुत्ता वेंतरणयरेहिं होंति रमणिज्जा।
सव्वे कूडा एदे णाणाविहरयणणिम्मविदा।।१६६३।।

हिमवान् पर्वत का पद्मसरोवर

(तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ से)

हिमवान पर्वत के मध्य में पूर्व-पश्चिम लंबा, पांच सौ योजन विस्तार से सहित और इससे दुगुणी अर्थात् एक हजार योजन प्रमाण लंबाई से शोभायमान पद्म नामक द्रह है।।१६५८।। विष्कंभ ५००। आयाम १०००। यह पद्मद्रह दश योजन गहरा तथा चार तोरण, वेदियों नन्दनवनों, और शुभसंचय युक्त रत्नों से रचे गये विकसित फूलों से सहित है।।१६५९।। इस पंकजद्रह के ईशानकोण में वैश्रमण नामक कूट और आग्नेय दिशा में श्रीनिचय नामक कूट निर्दिष्ट किया गया है।।१६६०।। उसके नैऋत्य भाग में क्षुद्रहिमवान् कूट और पश्चिमोत्तर भाग में ऐरावत नामक कूट कहा गया है।।१६६१।। पद्मद्रहके उत्तर भाग में श्रीसंचय नामक कूट स्थित है। इन पांच कूटों से हिमवान् पर्वत 'पंचशिखरी' इस नाम से संयुक्त है।।१६६२।। नाना प्रकार के रत्नों से निर्मित ये सब कूट उपवन-वेदियों से सहित और व्यन्तरों के नगरों से रमणीय हैं।।१६६३।।

१. तिलोयपण्णत्ति पृ. ३६० से ३७४ तक।

उत्तरदिसाविभागे जलम्मि पउमद्दहस्स जिणकूडो।
सिरिणिचयं वेरुलियं अंकमयं अच्छरीय रुचगं च।।१६६४।।
सिहरीउप्पलकूडा पदाहिणा होंति तस्स सलिलम्मि।
तडवणवेदीहिं जुदा वेंतरणयरेहिं सोहिल्ला।।१६६५।।
उदयं भूमुहवासं मज्झं पणवीस तत्तियं दलिदं।
मुहभूमिजुदस्सद्धं पत्तेक्कं जोयणाणि कूडाणं।।१६६६।।
२५।२५।२५/२।७५/४।
दहमज्झे अरविंदयणालं बादालकोसमुव्विद्धं।
इगिकोसं बाहल्लं तस्स मुणालं ति रजदमयं।।१६६७।।
को ४२, बा को १।
कंदो यरिट्ठरयणं णालो वेरुलियरयणणिम्मविदो।
तस्सुवरिं दरवियसियपउमं चउकोसमुव्विद्धं।।१६६८।।
को ४।
चउकोसरुंदमज्झं अंते दोकोसमहव चउकोसा।
पत्तेक्कं इगिकोसं उस्सेद्दायामकण्णिया तस्स।।१६६९।।
को ४। २। को ४। को १।

पद्मद्रह के जल में उत्तर दिशा की ओर से प्रदक्षिण रूप में जिनकूट, श्रीनिचय, वैडूर्य, अंकमय, आश्चर्य, रुचक, शिखरी और उत्पलकूट, ये कूट उसके जल में तटवेदियों और वन-वेदियों से सहित होते हुए व्यन्तर-नगरों से शोभायमान हैं।।१६६४-६५।।

उन कूटों में से प्रत्येक कूट की ऊंचाई पच्चीस योजन, भूविस्तार भी इतना अर्थात् पच्चीस योजन, मुखविस्तार पच्चीस योजन के अर्धभागप्रमाण और मध्यविस्तार भूमि तथा मुख के जोड़ का अर्धभाग मात्र है।।१६६६।। २५। २५। २५/२। ७५/४।

तालाब के मध्य में ब्यालीस कोस ऊंचा और एक कोस मोटा कमल का नाल है। इसका मृणाल रजतमय और तीन कोस बाहल्य से युक्त है।।१६६७।। उत्सेध को. ४२, बा. को.१।

उस कमल का कन्द अरिष्टरत्नमय और नाल वैडूर्यमणि से निर्मित है। इसके ऊपर चार कोस ऊँचा किंचित् विकसित पद्म है।।१६६८।।

उसके मध्य में चार कोस और अन्त में दो अथवा चार कोस विस्तार है। उसकी कर्णिका की ऊँचाई और आयाम में से प्रत्येक एक कोस मात्र है।। १६६९।।

को. ४। २। ४। को. १।

अहवा दोद्दो कोसा एक्कारसहस्सपत्तसंजुत्ता।
तक्कण्णिकाय उवरिं वेरुलियकवाडसंजुत्तो।।१६७०।।
को २ को २।
कूडागारमहारिहभवणो वरफलिहरयणणिम्मविदो।
आयामवासतुंगा कोसं कोसद्धतिचरणा कमसो।।१६७१।।
को १ । १/२ । ३/४ ।
तस्सिं सिरियादेवी भवणे पलिदोवमप्पमाणाऊ।
दस चावाणिं तुंगा सोहम्मिंदस्स सहदेवी।।१६७२।।
सिरिदेवीए होंति हु देवा सामाणिया य तणुरक्खा।
परिसत्तिदयाणीया पइण्णअभियोगकिब्बिसिया।।१६७३।।
ते सामाणियदेवा विविहंजणभूसणोहिं कयसोहा।
सुपसत्थविउलकाया चउस्सहस्सयपमाणा य।।१६७४।।
४०००।
ईसाणसोममारुददिसाण भागेसु पउमउवरिम्मि।
सामाणियाण भवणा होंति सहस्साणि चत्तारि।।१६७५।।
४०००।

अथवा, कर्णिका की ऊंचाई और लम्बाई दो-दो कोस मात्र है। यह कमलकर्णिका ग्यारह हजार पत्तों से संयुक्त है। इस कर्णिका के ऊपर वैडूर्यमणिमय कपाटों से संयुक्त और उत्तम स्फटिकमणि से निर्मित कूटागारों में श्रेष्ठ भवन है। इसकी लम्बाई एक कोस, विस्तार अर्ध कोस प्रमाण और ऊंचाई एक कोस के चार भागों में से तीन भाग मात्र है।।१६७०-१६७१।। को १ । १/२ । ३/४।

इस भवन में एक पल्योपमप्रमाण आयु की धारक और दश धनुष ऊंची श्री नामक सौधर्म इन्द्र की सहदेवी निवास करती हैं।।१६७२।।

श्री देवी के सामानिक, तनुरक्ष, तीनों प्रकार के पारिषद, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक जाति के देव हैं।। १६७३।।

विविध प्रकार के अंजन और भूषणों से शोभायमान तथा सुप्रशस्त एवं विशालकाय वाले वे सामानिक देव चार हजार प्रमाण हैं।। १६७४ ।। ४०००।

ईशान, सोम (उत्तर) और वायव्य दिशाओं के भागों में पद्मों के ऊपर उन सामानिक देवों के चार हजार भवन हैं।। १६७५ ।। ४०००।

सिरिदेवीतणुरक्खा देवा सोलससहस्सया ताणं।
पुव्वादिसु पत्तेक्कं चत्तारिसहस्सभवणाणि।।१६७६।।
१६०००।
अब्भंतरपरिसाए आइच्चो णाम सुरवरो होदि।
बत्तीससहस्साणं देवाणं अहिवई धीरो।।१६७७।।
पउमद्दहपउमोवरि अग्गिदिसाए भवंति भवणाइं।
बत्तीससहस्साइं ताणं वररयणरइदाइं।।१६७८।।
३२०००।
पउमम्मि चंदणामो मज्झिमपरिसाए अहिवई देओ।
चालीससहस्साणं सुराण बहुयाणसत्थाणं।।१६७९।।
४००००।
अडदालसहस्साणं सुराण सामी समुग्गयपयाओ।
बाहिरपरिसाए जदुणामो सेवेदि सिरिदेविं।।१६८०।।
४८०००।
णइरिदिसाए ताणं अडदालसहस्ससंखपासादा।
पउमद्दहमज्झम्मि य सुतुंगतोरणदुवाररमणिज्जा।। १६८१।।
४८०००।

श्री देवी के तनुरक्षक देव सोलह हजार हैं। इनके पूर्वादिक दिशाओं में से प्रत्येक दिशा में चार हजार भवन है।। १६७६ ।। ४ × ४००० = १६०००।

अभ्यन्तर परिषद् में बत्तीस हजार देवों का अधिपति धीर आदित्य नामक उत्तम देव है।। १६७७।।

पद्मद्रह के कमलों के ऊपर आग्नेय दिशा में उन देवों के उत्तम रत्नों से रचित बत्तीस हजार भवन हैं।। १६७८ ।। ३२०००।

पद्मद्रह पर मध्यम परिषद् के बहुत यान और शस्त्रयुक्त चालीस हजार देवों का अधिपति चन्द्र नामक देव है।। १६७९ ।। ३२०००।

बाह्य परिषद् के अड़तालीस हजार देवों का स्वामी प्रतापशाली जतु नामक देव श्रीदेवी की सेवा करता है।। १६८०।। ४८०००।

नैऋतदिशा में उन देवों के उन्नत तोरणद्वारों से रमणीय अड़तालीस हजार भवन पद्मद्रह के मध्य में स्थित हैं।। १६८१ ।। ४८०००।

कुंजरतुरयमहारहगोवइगंधव्व-णट्टदासाणं ।
सत्त यणीया सत्तहि कच्छाहिं तत्थ संजुत्ता।।१६८२।।
पढमाणीयपमाणं सरिसं सामणियाण सेसेसुं।
विउणा विउणा संखा छस्सु वणीएसु पत्तेयं।।१६८३।।
कुंजरपहुदितणूहिं देवा विकिरंति विमलसत्तिजुदा।
मायालोहविहीणा णिच्चं सेवंति सिरिदेविं।।१६८४।।
सत्ताणीयाण घरा पउमद्दहपच्छिमप्पएसम्मि ।
कमलकुसुमाण उवरिं सत्त च्चिय कणयणिम्मविदा।।१६८५।।
अट्ठुत्तरसयमेत्तं पडिहारा मंतिणो य दूदा य ।
बहुविहवरपरिवारा उत्तमरूवाइं विणयजुत्ताइं।। १६८६।।
अट्ठुत्तरसयसंखा पासादा ताणं पउमगब्भेसुं ।
दिसविदिसविभागठिदा दहमज्झे अधियरमणिज्जा।। १६८७।।
होंति पइण्णयपहुदी ताणं चउणं वि पउमपुप्फेसुं।
उच्छिण्णो कालवसा तेसुं परिमाणउवएसो।।१६८८।।
कमला अकिट्टिमा ते पुढविमया सुन्दरा य इगिलक्खं।
चालीससहस्साणिं एक्कसयं सोलसेहिं जुदं।।१६८९।।
१४०११६।

कुंजर, तुरंग, महारथ, बैल, गन्धर्व, नर्तक और दास, इनकी सात सेनाएँ हैं। इनमें से प्रत्येक सात कक्षाओं से सहित है।।१६८२।। प्रथम अनीक का प्रमाण सामानिक देवों के सदृश है। शेष छः सेनाओं में से प्रत्येक का प्रमाण उत्तरोत्तर दूना-दूना है।।१६८३।।

निर्मल शक्ति से संयुक्त देव हाथी आदि के शरीरों की विक्रिया करते और माया एवं लोभ से रहित होकर नित्य ही श्रीदेवी की सेवा करते हैं।। १६८४।।

सात अनीक देवों के सात घर पद्मद्रह के पश्चिम प्रदेश में कमल कुसुमों के ऊपर सुवर्ण से निर्मित हैं।। १६८५।। उत्तम रूप व विनय से संयुक्त और बहुत प्रकार के उत्तम परिवार से सहित ऐसे एक सौ आठ प्रतीहार, मंत्री एवं दूत हैं।। १६८६।।

उनके अतिशय रमणीय एक सौ आठ भवन द्रह के मध्य में कमलों पर दिशा और विदिशा के विभागों में स्थित हैं।। १६८७।। पद्मपुष्पों पर स्थित जो प्रकीर्णक आदिक देव हैं, उन चारों के प्रमाण का उपदेश कालवश नष्ट हो गया है।। १६८८।।

वे सब अकृत्रिम पृथिवीमय सुन्दर कमल एक लाख चालीस हजार एक सौ सोलह हैं।। १६८९।। १४०११६।

एवं महापुराणं परिमाणं ताण होदि कमलेसुं ।
खुल्लयपुरसंखाणं को सक्कइ कादुमखिलेणं।।१६९०।।
पउमदहे पुव्वमुहा उत्तरगेहा हवंति सव्वे वि।
ताणभिमुहा वि सेसा खुल्लयगेहा जहाजोग्गं।।१६९१।।
कमलकुसुमेसु तेसुं पासादा जेत्तिया समुद्दिट्ठा ।
तेत्तियमेत्ता होंति हु जिणगेहा विविहरयणमया।।१६९२।।
भिंगारकलसदप्पणबुब्बुदघंटाधयादिसंपुण्णा ।
जिणवरपासादा ते णाणाविहतोरणदुवारा।।१६९३।।
वरचामरभामंडलछत्तत्तयकुसुमवरिसपहुदीहिं ।
संजुत्ताओ तेसुं जिणवरपढिमाओ राजंति।।१६९४।।

इस प्रकार कमलों के ऊपर स्थित उन महानगरों का प्रमाण (एक लाख चालीस हजार एक सौ सोलह) है। इनके अतिरिक्त क्षुद्रपुरों की पूर्णरूप से गिनती करने के लिए कौन समर्थ हो सकता है ?।। १६९०।।

पद्मद्रह में सब ही उत्तम गृह पूर्वाभिमुख हैं और शेष क्षुद्रगृह यथायोग्य उनके सम्मुख स्थित हैं।। १६९१।।

उन कमल पुष्पों पर जितने भवन कहे गए हैं, उतने ही वहां विविध प्रकार के रत्नों से निर्मित जिनगृह भी हैं।। १६९२।।

वे जिनेन्द्र प्रासाद नाना प्रकार के तोरण द्वारों से सहित और झारी, कलश, दर्पण, बुद्बुद्, घंटा एवं ध्वजा आदि से परिपूर्ण हैं।। १६९३।।

उन जिनभवनों में उत्तम चमर, भामण्डल, तीन छत्र और पुष्पवृष्टि आदि से संयुक्त जिनेन्द्र प्रतिमाएँ विराजमान हैं।। १६९४।।

महाहिमवान पर्वत का महापद्म सरोवर

भरहावणिरुंदादो अडगुणरुंदो व दुसय उच्छेहो।
होदि महाहिमवंतो हिमवंतवियं वणेहिं कयसोहो।।१७१७।।

रुं ८०००० । उ २०० ।

पउमद्दहाउ दुगुणो वासायामेहि गहिरभावेणं।
होदि महाहिमवंते महपउमो णाम दिव्वदहो।।१७२७।।

वा १००० । आ २००० । गा २० ।

तद्दहपउमस्सोवरि पासादे चेट्ठदे य हिरिदेवी।
बहुपरिवारेहिं जुदा सिरियादेवि व्व वण्णिजगुणोहा।।१७२८।।
णवरि विसेसो एसो दुगुणा परिवारपउमपरिसंखा।
जेत्तियमेत्तपसादा जिणभवणा तत्तिया रम्मा।।१७२९।।
ईसाणदिसाभाए वेसमणो णाम सुंदरो कूडो ।
दक्खिणदिसाविभागे कूडो सिरिणिचयणामो य।।१७३०।।
णइरिदिभागे कूडं महहिमवंतो विचित्तरयणमओ।
पच्छिमउत्तरभागे कूडो एरावदो णाम।।१७३१।।

महाहिमवान पर्वत का महापद्म सरोवर

महामहिमवान् पर्वत का विस्तार भरत क्षेत्र से अठ गुणा और ऊँचाई दो सौ योजन प्रमाण है व हिमवन्त के समान ही वनों से शोभायमान है।।१७१७।।

वि. ८०००/१९ । उं. २०० ।

महाहिमवान् पर्वत पर स्थित महापद्म नामक द्रह पद्मद्रह की अपेक्षा दुगुणे विस्तार, लम्बाई व गहराई से सहित है।। १७२७।।

विस्तार १०००। आयाम २०००। गहराई २०।

उस तालाब में कमल के ऊपर स्थित प्रासाद में बहुत से परिवार से संयुक्त तथा श्रीदेवी के सदृश वर्णनीय गुणसमूह से परिपूर्ण ह्री देवी रहती है।।१७२८।। यहाँ विशेषता केवल यह है कि ह्री देवी के परिवार और पद्मों की संख्या श्री देवी की अपेक्षा दूनी है। **इस तालाब में जितने प्रासाद हैं उतने ही रमणीय जिनभवन भी हैं।।१७२९।।** इस तालाब के ईशान दिशा भाग में सुन्दर वैश्रवण नामक कूट, दक्षिण दिशा भाग में श्रीनिचय नामक कूट, नैऋत्यदिशा भाग में विचित्र रत्नों से निर्मित

सिरिसंचयं ति कूडो उत्तरभागे दहस्स चेट्ठेदि ।
एदेहिं कूडेहिं महहिमवंतो य पंचसिहरो त्ति।।१७३२।।
एदे सव्वे कूडा वेंतरणयरेहिं परमरमणिज्जा ।
उववणवेदीजुत्ता उत्तरपासे जलम्मि जिणकूडो।।१७३३।।
सिरिणिचयं वेरुलियं अंकमयं अच्छरीयरुजगाइं।
उप्पलसिहरी कूडा सलिलम्मि पदाहिणा होंति।।१७३४।।

निषध पर्वत पर तिगिंछ सरोवर

सोलसलहस्सअडसयबादाला दो कला णिसहरुंदं।
उणवीसहिदा सूई तीससहस्साणि छल्लक्खं।।१७५०।।

१६८४२ । २/१९ । ६३०००/१९ ।

पउमद्दहाउ चउगुणरुंदप्पहुदी भवेदि दिव्वदहो।
तीगिच्छो विक्खादो बहुमज्झे णिसहसेलस्स।।१७६१।।

वा २०००, आ ४०००, गा ४०, पउ ४२, संखा ५६०४६४, वा १, मु ३, प ४, मज्झि ४, अं ४ वा २ ।

महाहिमवान् कूट, पश्चिमोत्तर भाग में ऐरावत नामक कूट और उत्तर भाग में श्रीसंचय नामक कूट स्थित है। इन कूटों से महाहिमवान् पर्वत पंचशिखर कहलाता है।।१७३०-१७३२।।

ये सब कूट व्यन्तर नगरों से परमरमणीय और उपवन वेदियों से संयुक्त हैं। तालाब के उत्तरपार्श्व भाग में जल में जिनकूट है।। १७३३।।

श्रीनिचय, वैडूर्य, अंकमय, आश्चर्य, रुचक, उत्पल और शिखरी, ये कूट जल में प्रदक्षिण रूप से स्थित हैं।। १७३४।।

निषध पर्वत पर तिगिंछ सरोवर

निषध पर्वत का विस्तार सोलह हजार आठ सौ ब्यालीस योजन और दो कला तथा सूची उन्नीस से भाजित छः लाख तीस हजार योजन प्रमाण है।। १७५० ।।

१६८४२ । २/१९। ६,३००००/१९।।

निषध पर्वत के बहुमध्य भाग में पद्मद्रह की अपेक्षा चौगुणे विस्तारादि से सहित और तिगिंछनाम से प्रसिद्ध एक दिव्य तालाब है।।१७६१।। व्यास २०००, आयाम ४०००, अवगाह ४०, नाल की ऊँचाई ४२, संख्या ५६०४-६४, बाहल्य १, मृणाल ३,

तद्दहपउमस्सोवरि पासादे चेट्ठदे य धिदिदेवी।
बहुपरिवारेहिं जुदा णिरुवमलावण्णसंपुण्णा।।१७६२।।
इगिपल्लपमाणाऊ णाणाविहरयणभूसियसरीरा।
अइरम्मा वेंतरिया सोहम्मिंदस्स सा देवी।।१७६३।।
जेत्तियमेत्ता तस्सिं पउमगिहा तेत्तिया जिणिंदपुरा।
भव्वाणाणंदयरा सुरकिण्णरमिहुणसंकिण्णा ।।१७६४।।
ईसाणदिसाभाए वेसमणो णाम मणहरो कूडो।
दक्खिणदिसाविभागे कूडो सिरिणिचयणामो य।।१७६५।।
णइरदिदिसाविभागे णिसहो णामेण सुंदरो कूडो।
अइरावदो त्ति कूडो तीगिच्छीपच्छिमुत्तरविभागे।।१७६६।।
उत्तरदिसाविभागे कूडो सिरिसंचवो त्ति णामेण ।
एदेहिं कूडेहिं णिसहगिरी पंचसिहरि त्ति।। १७६७।।
वरवेदियाहिं जुत्ता वेंतरणयरेहिं परमरमणिज्जा।
एदे कूडा उत्तरपासे सलिलम्मि जिणकूडो।।१७६८।।
सिरिणिचयं वेरुलियं अंकमयं अंबरीयरुजगाइं।
सिहिरी उप्पलकूडो तिंगिच्छिदहस्स सलिलम्मि।।१७६९।।

पद्म ४, मध्यव्यास ४, अंतव्यास २ वा ४ योजन। उस द्रह संबंधी पद्म के ऊपर स्थित भवन में बहुत परिवार से संयुक्त और अनुपम लावण्य से परिपूर्ण धृति देवी निवास करती है।।१७६२।। एक पल्य प्रमाण आयु की धारक और नाना प्रकार के रत्नों से भूषित शरीर वाली अतिरमणीय वह व्यन्तरिणी सौधर्म इन्द्र की देवी है।।१७६३।।

उस तालाब में जितने पद्मगृह हैं, उतने ही भव्य जनों को आनन्दित करने वाले किन्नर-देवों के युगलों से संकीर्ण जिनेन्द्रपुर—जिनमंदिर हैं।।१७६४।।

तिगिंछ तालाब के ईशान दिशा भाग में मनोहर वैश्रवण नामक कूट, दक्षिण दिशा भाग में श्रीनिचय नामक कूट, नैऋत्यदिशा भाग में सुन्दर निषध नामक कूट, पश्चिमोत्तरकोण में ऐरावत कूट और उत्तरदिशा भाग में श्रीसंचय नामक कूट है। इन कूटों से निषध पर्वत 'पंचशिखरी' इस प्रकार प्रसिद्ध है।।१७६५-१७६७।।

ये कूट उत्तम वेदिकाओं से सहित और व्यन्तर नगरों से अतिशय रमणीय हैं। उत्तरपार्श्व भाग में जल में जिनकूट है।।१७६८।।

तिगिंछ तालाब के जल में श्रीनिचय, वैडूर्य, अंकमय, अंबरीक (अच्छरीय = आश्चर्य) रुचक, शिखरी और उत्पल कूट स्थित हैं।।१७६९।।

सीता-सीतोदा नदी के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

जमकंमेघगिरीदो पंचसया जोयणाणि गंतूणं।
पंचदहा पत्तेक्कं सहस्सदलजोयणंतरिदा[1]।।२०८९।।
५००।
उत्तरदक्खिणदीहा सहस्समेक्कं हवंति पत्तेक्कं।
पंचसयजोयणाइं रुंदा दसजोयणवगाढा।।२०९०।।
१०००।५००।१०।
णिसहकुरुसूरसुलसा बिज्जूणामेह होंति ते पंच।
पंचाणं बहुमज्झे सीदोदा सा गदा सरिया।।२०९१।।
होंति दहाणं मज्झे अंबुजकुसुमाण दिव्वभवणेसुं।
णियणियदहणामाणं णागकुमाराण वासा वि।।२०९२।।
अवसेसवण्णणाओ जाओ पउमद्दहम्मि भणिदाओ।
ताओ च्चिय एदेसुं णादव्वाओ वरदहेसुं।।२०९३।।
एक्केक्कस्स दहस्स य पुव्वदिसाए य अवरदिब्भाए।
दह दह कंचणसेला जोयणसयमेत्तउच्छेहा।।२०९४।।
१००।

सीता-सीतोदा नदी के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

यमक और मेघगिरि से आगे पाँच सौ योजन जाकर पाँच द्रह हैं, जिनमें प्रत्येक के बीच अर्ध सहस्र अर्थात् पाँच सौ योजन का अन्तराल है।।२०८९।। ५००।

प्रत्येक द्रह एक हजार योजन प्रमाण उत्तर-दक्षिण लंबे, पाँच सौ योजन चौड़े और दस योजन गहरे हैं।।२०९०।।१०००।५००।१०।

निषध, कुरु (देवकुरु), सूर, सुलस और विद्युत्, ये उन पाँच द्रहों के नाम हैं। इन पाँचों द्रहों के बहुमध्य भाग में से सीतोदा नदी गई है।।२०९१।। द्रहों के मध्य में कमल पुष्पों के दिव्य भवनों में अपने-अपने द्रह के नाम वाले नागकुमार देवों के निवास हैं।।२०९२।। अवशेष वर्णनाएँ जो पद्मद्रह के विषयम कही गई हैं, वे ही इन उत्तम द्रहों के विषय में भी जानना चाहिए।।२०९३।।

प्रत्येक द्रह के पूर्व और पश्चिम दिग्भाग में एक सौ योजन ऊँचे दश-दश कांचन-शैल हैं।।२०९४।।१००।

---

१. तिलोयपण्णत्ति पृ. ४११ से ४१६ तक।

पुव्वस्सिं चित्तणगो पच्छिमभाए विचित्तकूडो य।
जमकंमेघगिरि व्व सव्वं चिय वण्णणं तणं।।२१२४।।
जमकगिरिंदाहिंतो पंचसया जोयणाणि गंतूणं।
पंच दहा पत्तेक्कं सहस्सदलजोयणंतरिदा।।२१२५।।
५००।
णीलकुरुइंदुएरावदा य णामेहिं मालवंतो य।
ते दिव्वदहा णिसहद्दहादिवरवण्णणेहिं जुदा।।२१२६।।
दुसहस्सा बाणउदी जोयण दोभाग ऊणवीसहिदा।
चरिमदहादो दक्खिणभागे गंतूण होदि वरवेदी।।२१२७।।
जो १।दं १०००।
चरियट्टालयपउरा सा वेदी विविहधयवडेहि जुदा।
दारोवरिमठिदेहिं जिणिंदभवणेहिं रमणिज्जा।।२१२९।।
मेरुगिरिपुव्वदक्खिणपच्छिमए उत्तरम्मि पत्तेक्कं।
सीदासीदोदाए पंच दहा केइ इच्छंति।।२१३६।।
ताणं उवदेसेण य एक्केक्कदहस्स दोसु तीरेसुं।
पण पण कंचणसेला पत्तेक्कं होंति णियमेणं।।२१३७।।

सीता के पूर्व में चित्रनग और पश्चिम भाग में विचित्रकूट है। इनका सब वर्णन यमक और मेघगिरि के सदृश ही समझना चाहिए।।२१२४।। यमक पर्वतों के आगे पाँच सौ योजन जाकर पाँच द्रह हैं, जिनमें से प्रत्येक अर्ध सहस्र अर्थात् पाँच सौ योजन प्रमाण दूरी पर हैं।।२१२५।।५००। नील, कुरु (उत्तरकुरु), चन्द्र, ऐरावत और माल्यवन्त, ये उन दिव्य द्रहों के नाम हैं। ये दिव्य द्रह निषधद्रहादिक के उत्तम वर्णनों से युक्त हैं।।२१२६।। अन्तिम द्रह से दो हजार बानबै योजन और उन्नीस से भाजित दो भाग प्रमाण जाकर दक्षिण भाग में उत्तम वेदी है।।२१२७।। वह वेदी पूर्व-पश्चिम भागों में गजदन्तपर्वतों से संलग्न, एक योजन ऊँची और योजन के आठवें भाग प्रमाण विस्तार से सहित है।।२१२८।। यो. १।दं. १०००।

प्रचुर मार्ग व अट्टालिकाओं से सहित और नाना प्रकार की ध्वजा-पताकाओं से संयुक्त वह वेदी द्वारों के उपरिम भागों मे स्थित जिनेन्द्र भवनों से रमणीय है।।२१२९।। कितने ही आचार्य मेरुपर्वत के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर, इनमें से प्रत्येक दिशा में सीता तथा सीतोदा नदी के पाँच द्रहों को स्वीकार करते हैं।।२१३६।। उनके उपदेश से एक-एक द्रह के दोनों किनारों में से प्रत्येक किनारे पर नियम से पाँच-पाँच काँचन शैल हैं।।२१३७।।

हिमवन पर्वतादि के सरोवरों में
कमलों में जिनमंदिर
(त्रिलोकसार ग्रंथ से[1])

अथ तेषां पर्वतानां नामादिकं गाथाद्वयेनाह—

हिमवं महादिहिमवं णिसहो णीलो य रुम्मि सिहरी य।
मूलोवरि समवासा मणिपासा जलणिहिं पुट्ठा।।५६५।।

हिमवान् महादिहिमवान् निषधः नीलश्च रुक्मी शिखरी च।
मूलोपरि समव्यासा मणिपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टाः।।५६५।।

हिमवं। हिमवान् महाहिमवान् निषधो नीलश्च रुक्मी शिखरी च, एते सर्वे मूलोपरि समानव्यासाः मणिमयपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टाः।।५६५।।

हिमवन पर्वतादि के सरोवरों में
कमलों में जिनमंदिर

सुमेरु पर्वतों की दक्षिण दिशा से प्रारंभ कर क्रमशः भरतादि सात क्षेत्र हैं। जिनमें बीच-बीच में कुल पर्वतों के कारण अन्तर है। अर्थात् इन क्षेत्रों के अन्तराल में कुल पर्वत हैं। यथा—भरत और हैमवत के बीच में हिमवान् पर्वत है। हैमवत और हरि के बीच में महाहिमवान्, हरि और विदेह के बीच निषध, विदेह और रम्यक के बीच में नील, रम्यक और हैरण्यवत के बीच में रुक्मी तथा हैरण्यवत और ऐरावत के बीच में शिखरिन् पर्वत हैं।

दो गाथाओं द्वारा उन कुलाचलों के नामादि कहते हैं—

गाथार्थ—हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरिन् ये छह कुल पर्वत मूल में व ऊपर समान व्यास—विस्तार से युक्त हैं। मणियों से खचित इनके दोनों पार्श्वभाग समुद्रों का स्पर्श करने वाले हैं।।५६५।।

विशेषार्थ—(१) हिमवान् (२) महाहिमवान् (३) निषध (४) नील (५) रुक्मी और (६) शिखरिन् ये छह कुलाचल पर्वत हैं। दीवाल सदृश इन कुलाचलों का व्यास-चौड़ाई नीचे से ऊपर तक समान है। इन कुलाचलों के दोनों पार्श्वभाग मणिमय हैं और समुद्रों को स्पर्श करने वाले हैं। जम्बूद्वीप में कुलाचलों के दोनों पार्श्वभाग लवणसमुद्र को स्पर्श करते हैं। धातकीखण्ड में लवणोदधि और कालोदधि को स्पर्श करते हैं किन्तु

---

१. त्रिलोकसार, पृ. ४८१ से ४९१ तक।

हेमज्जुणतवणीया कमसो वेलुरियरजदहेममया।
इगिदुगचउचउदुगइगिसयतुंगा होंति हु कमेण।।५६६।।

हेमार्जुनतपनीयाः क्रमशः वैडूर्यरजतहेममयाः।
एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशततुङ्गा भवन्ति हि क्रमेण।।५६६।।

हेम। हेमवर्णः अर्जुनवर्णः श्वेत इत्यर्थः। तपनीयवर्णः कुक्कटचूडछविरित्यर्थः, वैडूर्यवर्णः मयूरकण्ठच्छविरित्यर्थः, रजतवर्णः हेममयः एते क्रमशः तेषां पर्वतानां वर्णाः एकशतः द्विशतः चतुःशतः चतुःशतः द्विशतः एकशतः क्रमेण तेषामुत्सेधा भवन्ति।।५६६।।

इदानीं हिमवदादिकुलपर्वतानामुपरिस्थितह्रदानां नामान्याहः—

पउममहापउमा तिगिंछा केसरि महादिपुंडरिया।
पुंडरिया य दहाओ उवरिं अणुपव्वदायामा।।५६७।।

पद्मो महापद्मः तिगिञ्छाः केसरिः महादिपुण्डरीकः।
पुण्डरीकश्च ह्रदा उपरि अनुपर्वतायामाः।।५६७।।

पउम। पद्मो महापद्मस्तिगिञ्छः केसरी महापुण्डरीकः पुण्डरीक इत्येते ह्रदास्तेषामुपरि पर्वतानुवर्त्यायामास्तिष्ठन्ति।।५६७।।

पुष्करार्धद्वीप में कालोदधि और मानुषोत्तर पर्वत को स्पर्श करते हैं।

गाथार्थ —इन कुलाचलों का वर्ण क्रमशः हेम (स्वर्ण) अर्जुन (चाँदी सदृश श्वेत) तपनीय (तपाये हुए स्वर्ण सदृश) वैडूर्य मणि (नीला) रजत (श्वेत) और हेम (स्वर्ण) सदृश है। इनकी ऊँचाई का प्रमाण भी क्रमशः एक सौ, दो सौ, चार सौ, चार सौ, दो सौ और एक सौ योजन है।।५६६।।

विशेषार्थ—हिमवान् पर्वत का वर्ण स्वर्ण सदृश और ऊँचाई १०० योजन (४००००० मील) है। महाहिमवान् का अर्जुन अर्थात् श्वेत वर्ण तथा ऊँचाई २०० योजन (८००००० मील) है। निषध पर्वत का वर्ण तपनीय तपाये हुए स्वर्ण समान तथा ऊँचाई ४०० योजन (१६००००० मील) है। नील पर्वत का वर्ण वैडूर्य (पन्ना) अर्थात् मयूर कण्ठ सदृश नीला है, इसकी ऊँचाई ४०० योजन है। रुक्मी पर्वत का वर्ण रजत अर्थात् श्वेत तथा ऊँचाई २०० योजन है। इसी प्रकार शिखरिन् पर्वत का वर्ण स्वर्ण सदृश एवं ऊँचाई १०० योजन है।

हिमवत् आदि कुलाचलों पर स्थित सरोवरों के नाम कहते हैं-

गाथार्थ—हिमवत् आदि पर्वतों पर क्रमशः पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक ये छह सरोवर पर्वतों के सदृश हीनाधिक आयाम वाले हैं।।५६७।।

अथ तेषां ह्रदानां व्यासादिकं प्रतिपादयन् तत्रस्थाम्बुजानां स्वरूपं निरूपयति—

वासायामोगाढं पणदसदसमहदपव्वदुदयं खु।
कमलस्सुदओ वासो दोविय गाहस्स दसभागो।।५६८।।
व्यासायामागाधाः पञ्चदशदशमहतपर्वतोदयाः खलु।
कमलस्योदयः व्यासः द्वावपि गाधस्य दशभागौ।।५६८।।

वासा। तेषां ह्रदानां व्यासायामागाधा यथासंख्यं पञ्चगुणितदशगुणितदशमभाग हततत्तत्पर्वतोदयाः १०० । २०० । ४०० । ४०० । २०० । १०० खल। व्या. ५००=आ. १००० वे. १० तत्रस्थकमलस्योदयव्यासौ तु द्वावपि तत्तद्ध्रदानां गाधदशमभागौ ज्ञातव्यौ।।५६८।।

उन सरोवरों के व्यासादिक का प्रतिपादन करते हुए वहाँ स्थित कमलों का स्वरूप कहते हैं—

गाथार्थ—पर्वतों के (अपने-अपने) उदय (ऊँचाई) को पाँच से गुणित करने पर द्रहों का व्यास, दस से गुणित करने पर द्रहों का आयाम और दस से भाजित करने पर द्रहों की गहराई प्राप्त होती है। द्रहों में रहने वाले कमलों का व्यास एवं उदय ये दोनों भी द्रहों की गहराई के दसवें भाग प्रमाण हैं।।५६८।।

विशेषार्थ—उन सरोवरों का व्यास, आयाम और गहराई का प्रमाण अपने-अपने पर्वतों की ऊँचाई के प्रमाण को क्रमशः ५ और १० से गुणित करने पर तथा १० से भाजित करने पर प्राप्त होता है तथा सरोवरों में स्थित कमलों का व्यास और उदय भी सरोवरों की गहराई के दसवें भाग प्रमाण है यथा—हिमवान् पर्वत की ऊँचाई १०० योजन है। अतः उस पर स्थित पद्मद्रह की लम्बाई (१००×१०)=१००० योजन, चौड़ाई (१००×५)=५०० योजन और गहराई (१००÷१०)=१० योजन प्रमाण है। इस पद्मद्रह में रहने वाले कमल की ऊँचाई एवं चौड़ाई दोनों (१०÷१०)= एक-एक योजन प्रमाण है। (२) महाहिमवान पर्वत की ऊँचाई २०० योजन है अतः उस पर स्थित महापद्म सरोवर की लम्बाई (२००×१०)=२००० योजन, चौड़ाई (२००×५)=१००० योजन और गहराई (२००÷१०)=२० योजन प्रमाण है। इस द्रह में रहने वो कमल की ऊँचाई और व्यास दोनों (२०÷१०)=२ योजन प्रमाण है। निषध पर्वत की ऊँचाई ४०० योजन है अतः उस पर रहने वाले तिगिञ्छ द्रह की लम्बाई (४००×१०)=४००० योजन, चौड़ाई (४००×५)=२००० योजन और गहराई (४००÷१०)=४० योजन प्रमाण है। इसमें स्थित कमल की ऊँचाई और व्यास दोनों (४०÷१०)=४ योजन प्रमाण है।

अथ तेषां कमलानां विशेषस्वरूपं गाथाद्वयेनाह —

णियगंधवासियदिसं वेलुरियविणिम्मिउच्चणालजुदं।
एक्कारसहस्सदलं णवविय सियमत्थि दहमज्झे।।५६९।।

निजगन्धवासितदिशं वैडूर्यविनिर्मितोच्चनालयुतम्।
एकादशसहस्रदलं नवविकसितमस्ति ह्रदमध्ये।।५६९।।

णिय। निजगन्धवासितदिशं वैडर्यूविनिर्मितोच्चनालयुतं एकादशोत्तरसहस्रदलं नवविकसितं पृथ्वीसाररूपं कमलं तेषां ह्रदानां मध्ये अस्ति।।५६९।।

कमलदलजलविणिग्गयतुरियुदयं वास कण्णियं तत्थ।
सिरिरयणगिहं दिग्घति कोसं तस्सद्धमुभयजोगदलं।।५७१।।

कमलदलजलविनिर्गततुर्योदयः व्यासः कर्णिकायाः तत्र।
श्रीरत्नगृहं दैर्घ्यत्रिकं कोशः तस्यार्धमुभययोगदलं।।५७१।।

कमल। कमलोत्सेधार्धमेव नालस्य जलविनिर्गतिः कमलचतुर्थांश एव उदयव्यासौ कर्णिकायाः। तत्र श्रीदेवतायाः रत्नमयं गृहमस्ति तस्य दैर्घ्यत्रिकं दैर्घ्यव्यासोदयाः यथासंख्यं क्रोशप्रमाणं तस्यार्धं तयोरुभययोर्योगार्धं च स्यात्।।५७१।।

दो गाथाओं द्वारा उन कमलों के विशेष स्वरूप को कहते हैं —

गाथार्थ — अपनी सुगंध से सुवासित की हैं दिशाएँ जिसने, तथा जो वैडर्यूमणि से निर्मित ऊँची नाल से संयुक्त है ऐसा एक हजार ग्यारह पत्रों से युक्त नवविकसित कमल के सदृश पृथ्वीकायिक कमल सरोवर के मध्य में है।।५६९।।

विशेषार्थ — प्रथम पद्म सरोवर के मध्य में जो कमल है, वह पृथ्वी स्वरूप है, उसकी नाल ऊँची और वैडूर्यमणि से बनी हुई है। उसके पत्रों की संख्या १०११ है और उसका आकार नवविकसित कमल सदृश है।

गाथार्थ — कमल का अर्ध उत्सेध जल के बाहर निकला हुआ है। कमल की कर्णिका की ऊँचाई और चौड़ाई कमल के उदय और व्यास का चतुर्थांश है। उस कर्णिका पर श्री देवी का रत्नमय गृह है, उसकी दीर्धता, व्यास और उदय ये तीनों क्रमशः एक कोश, अर्ध कोश और दोनों के योग का अर्ध भाग अर्थात् (१+१/२=३/२÷२)= पौन कोश प्रमाण है।।५७१।।

विशेषार्थ — कमल के उत्सेध का अर्ध प्रमाण अर्थात् १/२ योजन नाल जल से ऊपर निकली हुई है। कर्णिका का उदय और व्यास कमल के उदय और व्यास का चतुर्थांश है। अर्थात् कमल का उदय और व्यास एक-एक योजन प्रमाण है, अतः

अथ एतदनुगुणं प्रक्षेपगाथामाह —

दहमज्झे अरविंदयणालं बादालकोसमुव्विद्धं।
इगिकोसं बाहल्लं तस्स मुणालं ति रजदमयं।।५७०।।

ह्रदमध्ये अरविन्दकनालं द्वाचत्वारिंशत्कोशोत्सेधम्।
एकक्रोशं बाहल्यं तस्य मृणालं त्रिः रजतमयम्।।५७०।।

दह। ह्रदमध्येरविन्दस्य नालं द्वाचत्वारिंशत्क्रोशोत्सेधं एकक्रोशबाहल्यं तस्य मृणालं तु त्रिक्रोशबाहल्यं रजतमयं स्यात्।।५७०।।

अथ तन्निवासिनीनां देवीनां नामानि तासां स्थितिपूर्वकं तत्परिवारं चाह —

सिरिहिरिधिदिकित्तीवि य बुद्धीलच्छी य पल्लठिदिगाओ।
लक्खं चत्तसहस्सं सयदहपण पउमपरिवारा।।५७२।।

श्री ह्री धृतिः कीर्तिः अपि च बुद्धिः लक्ष्मीः च पल्यस्थितिकाः।
लक्षं चत्वारिंशत्सहस्रं शतदशपञ्च पद्मपरिवारः।।५७२।।

सिरि। श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्याख्या देव्यः पल्यस्थितिकाः एकं लक्षं

कर्णिका का उदय और व्यास (१÷४)=१/४= एक-एक कोश प्रमाण है। इसी कर्णिका पर श्री देवी का रत्नमय गृह है, जिसकी लम्बाई एक कोश, चौड़ाई १/२ कोश और ऊँचाई ३/४ (पौन) कोश प्रमाण है।

कमल का विस्तार बताने वाली प्रक्षेप गाथा —

गाथार्थ — पद्मद्रह के मध्य में कमलनाल की ऊँचाई ४२ कोस और मोटाई एक कोस प्रमाण है। उसका मृणाल तीन कोस मोटा और रजतवर्ण का है।।५७०।।

विशेष — पद्मद्रह की गहराई १० योजन है। गाथा ५७० में कहा गया है कि कमलनाल जल से अर्ध योजन प्रमाण ऊपर है, इसी से यह सिद्ध होता है कि कमल नाल की कुल ऊँचाई १० (१/२) योजन है, तभी तो वह सरोवर की १० योजन की गहराई को पार करती हुई आधा योजन जल से ऊपर है। यही बात प्रक्षेप गाथा (५७०) कह रही है। इस गाथा में नाल की ऊँचाई ४२ कोश कही गई है, जिसके १० (१/२) योजन होते हैं।

कमल, कमलनाल एवं कमलकर्णिका के उत्सेधादि का चार्ट आगे पृ. ५१ पर देखें।

कमलों पर निवास करने वाली देवियों के नाम, आयु और उनके परिवार के संबंध में कहते हैं-

गाथार्थ — श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये छहों देवाङ्गनाएँ एक-एक पल्य की आयु वाली हैं। ये देवांगनाएँ पद्मादि द्रह संबंधी कमलों पर निवास करती हैं। **उन्हीं पद्मादि द्रहों में एक-एक कमल के १, ४०, ११५ परिवार कमल हैं।**

चत्वारिंशत्सहस्राणि शतं दश पञ्च प्रमाणानि कमलस्य परिवारपद्मानि १४०११५।।५७२।।

अथ परिवारकमलस्थितं श्रीदेवीनां परिवारं गाथाचतुष्टयेनाह—

आइच्चचंदजदुपहुदीओ तिप्परीसमग्गिजमणिरुदी।
बत्तीसताल अडदाल सहस्सा कमलममरसमं।।५७३।।

आदित्यचन्द्रजतुप्रभृतयः त्रिपारिषदाः अग्नियमनैऋत्यां।
द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि कमलानि अमरसमानि।।५७३।।

आइच्च। आदित्यचन्द्रजतुप्रभृतयस्त्रयः पारिषद्देवाः क्रमेणाग्नियमनैर्ऋत्यां दिशि तिष्ठन्ति तेषां संख्या द्वात्रिंशत्सहस्राणि चत्वारिंशत्सहस्राणि अष्टचत्वा-रिंशत्सहस्राणि भवन्ति कमलानि चामरसमानि।।५७३।।

आणीयगेहकमला पच्छिमदिसि सग गयस्सरहवसहा।
गंधव्वणच्चपत्ती पत्तेयं दुगुणसत्तकक्खजुदा।।५७४।।

उन परिवार कमलों में स्थित श्री देवी के परिवार का प्रमाण चार गाथाओं द्वारा कहते हैं—

गाथार्थ— आदित्य, चन्द्र और जतु हैं आदि में जिनके ऐसे तीन प्रकार के पारिषद देव (मूल कमल की) आग्नेय, दक्षिण और नैऋत्य दिशा में रहते हैं। इनका प्रमाण क्रमशः बत्तीस हजार, चालीस हजार और अड़तालीस हजार है। इनके कमल देवाङ्गना के कमल सदृश ही हैं।।५७३।।

विशेषार्थ— आदित्य नामक देव है प्रमुख जिसमें ऐसे आभ्यन्तर परिषद् के ३२००० देवों के ३२००० भवन श्री देवी के कमल की आग्नेय दिशा में है। ये एक-एक भवन एक-एक कमल पर बने हुए हैं। इसी प्रकार चन्द्र नामक देव है प्रमुख जिसमें ऐसे मध्य परिषद् के ४०००० देवों के ४०००० कमलों पर ४०००० ही भवन श्री देवी के कमल की दक्षिण दिशा में स्थित हैं तथा जतु नामक देव है। प्रमुख जिसमें ऐसे बाह्य परिषद् के ४८००० देवों के ४८००० कमलों पर ४८००० ही भुवन हैं, जो पद्म द्रह की श्री देवी के कमल की नैऋत्य दिशा में स्थित हैं। इन सभी देवों के भवन जिन कमलों पर स्थित हैं, वे कमल श्री देवी के कमल सदृश ही हैं।

गाथार्थ— हाथी, घोड़ा, रथ, बैल, गन्धर्व, नृत्यकी और पयादे इन सात अनीकों के अपने-अपने भवनों सहित सात कमल श्री देवी के कमल की पश्चिम दिशा में स्थित हैं। प्रत्येक अनीक सात-सात कक्षाओं से युक्त है। (प्रथम कक्ष के प्रमाण से) द्वितीयादि कक्षों के देवों का प्रमाण दूना-दूना है।।५७४।।

विशेषार्थ— हाथी, घोड़ा, रथ, बैल, गन्धर्व, नृत्यकी और पयादा ये सात प्रकार के

आनीकगेहकमलानि पश्चिमदिशि सप्त गजाश्वरथवृषभाः।
गन्धर्वनृत्यपत्तयः प्रत्येकं द्विगुणसप्तकक्षयुता।।५७४।।

आणीय। आनीकदेवानां गेहकमलानि सप्त पश्चिमायां दिशि संति ते आनीकाः गजाश्वरथवृषभगन्धर्वनृत्यपदातय इति सप्तापि प्रत्येकं वक्ष्यमाणस्वसामानिकसम ४००० प्रथमानीकात् द्विगुणगुणसप्तकक्षयुताः।।५७४।।

उत्तरदिसि कोणदुगे सामाणियकमल चदुसहस्समदो।
अब्भंतरे दिसं पडि पुह तेत्तियमंगरक्खपासादं।।५७५।।
अब्भंतरदिसि विदिसे पडिहारमहत्तरट्ठसयकमलं।
मणिदलजलसमणालं परिवारं पउममाणद्धं।।५७६।।

उत्तरदिशि कोणद्विके सामानिककमलानि चतुःसहस्रमतः।
अभ्यन्तरे दिशं प्रति पृथक् तावन्मात्राङ्गरक्षप्रासादाः।।५७५।।
अभ्यन्तरदिशि विदिशि प्रतिहारमहत्तराणामष्टशतकमलानि।
मणिदलजलसमनालं परिवारं पद्ममानार्धम्।।५७६।।

उत्तर। उत्तरदिग्भागस्थितवायव्यैशानकोणद्वये सामानिकदेवानां कमलानि चतुःसहस्राणि सन्ति अतोऽभ्यन्तरे प्रतिदिशं पृथक्-पृथक् तावन्मात्रा ४००० ङ्गरक्षप्रासादाः स्युः।।५७५।।

अनीक हैं। इन सात अनीकों के सात भवन सात कमलों पर हैं और वे कमल श्री देवी के कमल की पश्चिम दिशा में स्थित हैं। प्रत्येक अनीक सात-सात कक्षाओं से युक्त है। आगे कही जाने वाली सामानिक देवों की ४००० संख्या प्रमाण ही प्रथम अनीक की प्रथम कक्षा का प्रमाण है, इसके आगे यह प्रमाण दूना-दूना होता गया है।

श्री देवी की ७ अनीकों के सम्पूर्ण प्रमाण का चार्ट आगे पृ. ५१ पर देखें।

गाथार्थ— उत्तर दिशा के दोनों कोनों में अर्थात् ऐशान और वायव्य में सामानिक देवों के चार हजार कमल हैं, इन कमलों के भीतरी भाग में (मूल कमल की ओर) चारों दिशाओं में चार-चार हजार ही तनुरक्षकों के कमल हैं। अर्थात् उन पार्थिव कमलों पर भवन बने हुए हैं। उन अङ्गरक्षकों के कमलों के अभ्यन्तर भाग में (मूल कमल की ओर) चारों दिशाओं एवं चारों विदिशाओं में प्रतीहार महत्तरों के एक सौ आठ कमल हैं। ये सब परिवार कमल मणियों से रचित हैं। इन सबके व्यासादि का प्रमाण पद्म (मूल) कमल के प्रमाण से अर्ध-अर्ध है। परिवार कमलों के नाल की ऊँचाई जल की गहराई के सदृश ही है।।५७५-५७६।।

विशेषार्थ— उत्तर दिशा के दोनों कोण अर्थात् मूल कमल की ऐशान और वायव्य दिशा में सामानिक देवों के कुल ४००० कमल हैं। इनसे अभ्यन्तर अर्थात् मूल कमल की ओर पृथक्-पृथक् चारों दिशाओं में चार-चार हजार अङ्गरक्षकों के कमल हैं। इनके भी अभ्यन्तर भाग में अर्थात् मूल कमल की ओर चारों दिशाओं में १४, १४ और

अब्भंतर। तेभ्यः अभ्यन्तरदिशि १४ विदिशि च १३ प्रत्येकमेवं सति प्रतिहारमहत्तराणामष्टोत्तरशतकमलानि मणिमयदलानि जलोत्सेधसमनालानि सन्ति परिवारपद्मविशेषस्वरूपं सर्वं मुख्यपद्मप्रमाणार्धं स्यात्।।५७६।।

सिरिगिहदलमिदरगिहं सोहम्मिंदस्स सिरिहिरिधिदीओ।
कित्ती बुद्धी लच्छी ईसाणहिवस्स देवीओ।।५७७।।

श्रीग्रहदलमितरगृहं सौधर्मेन्द्रस्य श्रीह्रीधृतयः।
कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः ईशानाधिपस्य देव्यः।।५७७।।

सिरि। श्रीगृहव्यासादिप्रमाणार्धं इतरगृहव्यासादिप्रमाणं स्यात्। श्रीह्रीधृतयः सौधर्मेन्द्रस्य देव्यः कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः ईशानाधिपस्य देव्यः स्युः।।५७७।।

विदिशाओं में १३,१३ इस प्रकार प्रतिहार महत्तरों के कुल १०८ कमल हैं। सभी परिवार कमल मणिमय हैं और इन प्रत्येक कमलों पर परिवार देवों के एक-एक ही मणिमय भवन बने हुए हैं। इन परिवार कमलों का सम्पूर्ण (विशेष) स्वरूप अर्थात् व्यासादिक का प्रमाण प्रधान पद्म के प्रमाण से आधा-आधा है। इनके नाल की ऊँचाई सरोवर की गहराई के प्रमाण ही है। अर्थात् नाल जल के बराबर ऊँची है, जल से ऊपर नहीं है।

इस प्रकार श्री देवी का अवस्थान और उनके परिवार कमलों की कुल संख्या का प्रमाण एवं चित्रण निम्न प्रकार है—

श्री देवी के सम्पूर्ण परिवार कमलों का प्रमाण—**अङ्गरक्षक १६०००+सामानिक ४०००+अभ्यन्तर पारिषद ३२००० + मध्यम पारिषद ४०००० + बाह्य पारिषद ४८००० + प्रातिहार १०८ और + ७ अनीक =१४०११५ परिवार कमल हैं यदि इनमें सातों कक्षाओं का प्रमाण जोड़ दिया जावे, तो कुल परिवार समूह का प्रमाण (३५५६०००+१४०११५)=३६९६११५ प्राप्त होता है।**

हिमवान् से लेकर निषध पर्वत पर्यन्त कमलों का विष्कम्भ और उत्सेध आदि दूने-दूने प्रमाण वाला है। परिवार कमलों का प्रमाण भी दूना-दूना है।

श्री आदि देवियों के भवनों का व्यास आदि एवं परिवार कमलों के प्रमाण का चार्ट आगे पृ. ५२ पर देखें।

यह उपर्युक्त प्रमाण मात्र महाकमलों का है। प्रकीर्णक आदि क्षुद्र कमलों का प्रमाण अत्यधिक है। उन कमल पुष्पों पर जितने भवन कहे गये हैं, उतने ही वहाँ नाना प्रकार के रत्नों से निर्मित जिनमंदिर भी हैं। ति. पं. ४ । १६९२।।

गाथार्थ—श्री देवी के गृह का जितना व्यासादि है, परिवारदेवों के गृहों के व्यास आदि का प्रमाण उससे आधा-आधा है। श्री, ह्री और धृति ये तीन सौधर्मेन्द्र की देवकुमारियाँ हैं तथा कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये तीन ईशानेन्द्र की देवकुमारियाँ हैं।।५७७।।

सीता-सीतोदा नदियों के मध्य सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

अथ मेरोः पूर्वापरदक्षिणोत्तरदिक्षु स्थितानां ह्रदानां प्रमाणमेकैकस्य ह्रदस्य तीरद्वयस्थितानां काञ्चनशैलानां संख्यां च तदुत्सेधेन सह गाथाचतुष्टयेनाह[१]—

गमिय तदो पंचसयं पंचसरा पंचसयमिदंतरिया।
कुरुभद्दसालमज्झे अणुणदिदीहा हु पउमदहसरिसा।।६५६।।

गत्वा तत पञ्चशतं पञ्च सरांसि पञ्चशतमितान्तरिताः।
कुरुभद्रशालमध्ये अनुनदिदीर्घाणि हि पद्मह्रदसदृशानि।।६५६।।

गमिय। यमकगिरिभ्यां पञ्चशतयोजनानि ५०० गत्वा कुरुक्षेत्रयोः पूर्वापरभद्रसालयोश्च मध्ये पंचशतयोजनान्तराणि पञ्च पञ्च सरांसि। अनुनदिस्वयोग्यदीर्घाणि आयामकमलादिना पद्मह्रदसदृशानि संति।।६५६।।

सीता-सीतोदा नदियों के मध्य सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

मेरु पर्वत की पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर इन चारों दिशाओं में स्थित द्रहों का प्रमाण तथा एक-एक ह्रद के दोनों तटों पर स्थित काञ्चनशैलों की संख्या तथा उत्सेध चार गाथाओं द्वारा कहते हैं-

गाथार्थ—यमक गिरि से पाँच सौ योजन आगे जाकर कुरु और भद्रशाल क्षेत्रों में पाँच-पाँच द्रह हैं, जिनमें प्रत्येक के बीच पाँच-पाँच सौ योजन का अन्तराल है। ये द्रह नदी के अनुसार यथायोग्य दीर्घ हैं तथा इनमें रहने वाले कमल आदि का आयाम पद्मद्रह के सदृश है।।६५६।।

विशेषार्थ—यमक गिरि पर्वतों से पाँच सौ योजन आगे जाकर सीता और सीतोदा नदी में देवकुरु, उत्तरकुरु, पूर्व भद्रशाल और पश्चिम भद्रशाल इन चार क्षेत्रों के मध्य पाँच-पाँच अर्थात् २० द्रह हैं। ये द्रह नदी के अनुसार यथायोग्य दीर्घ हैं। अर्थात् ये द्रह सीता-सीतोदा नदी के बीच-बीच में हैं, अतः नदी की जहाँ जितनी चौड़ाई है, उतनी ही चौड़ाई का प्रमाण द्रहों का है। इन द्रहों की लम्बाई पद्म द्रह के सदृश १००० योजन प्रमाण है। जिस प्रकार पद्म द्रह में कमलादिक की रचना है, उसी प्रकार इन द्रहों में भी है।

---

१. त्रिलोकसार, पृ. ५४१-५४२।

णीलुत्तरकुरुचंदा एरावदमल्लवंतणिसहा य।
देवकुरुसूरसुलसाविज्जू सीददुगदहणामा।।६५७।।

णीलु। नीलोत्तरकुरुचन्द्रैरावतमाल्यवन्त इत्येताः पञ्च निषधदेवकुरुसूर-सुलसविद्युतः इत्येताः पञ्च सीतासीतोदयोः ह्रदनामानि।।६५७।।

णइणिग्गम्मदारजुदा ते तप्परिवारवण्णणं चेसिं।
पउमव्व कमलगेहे णागकुमारीउ णिवसंति।।६५८।।
नदीनिर्गमद्वारयुतानि तानि तत्परिवारवर्णनं चैषां।
पद्ममिव कमलगेहेषु नागकुमार्यो निवसन्ति।।६५८।।

णह। तानि सरांसि नदीप्रवेशनिर्गमद्वारयुतानि। एतेषां तत्परिवारवर्णनं च पद्मसर इव तत्रस्थकमलोपरिमगृहेषु सपरिवाराः नागकुमार्यो निवसन्ति।।६५८।।

दुतडे पण पण कंचणसेला सयसयतदद्धमुदयतियं।
ते दहमुहा णगक्खा सुरा वसंतीह सुगवण्णा।।६५९।।
द्वितटे पञ्च पञ्च काञ्चनशैलाः शतशततदर्धमुदयत्रयम्।
ते ह्रदमुखा नगाख्याः सुरा वसन्ति इह शुकवर्णाः।।६५९।।

दुतडे। तेषां सरसां द्वितटे पञ्च पञ्च काञ्चनशैलाः तेषामुदयभूमुखव्यासा यथासंख्यं शत १०० शत १०० पञ्चाश ५० द्योजनानि च शैला ह्रदसम्मुखाः। कथमेतत्। तदुपरिस्थनगरद्वाराणां ह्रदाभिमुखत्वात्। शुकवर्णास्तत्तन्नगाख्याः सुरास्तेषामुपरि वसन्ति।।६५९।।

गाथार्थ—नील, उत्तरकुरु, चन्द्र, ऐरावत और माल्यवन्त ये पाँच द्रह सीता नदी के हैं तथा निषध, देवकुरु, सूर, सुलस और विद्युत ये पाँच सीतोदा नदी के द्रहों के नामहैं।।६५७।।

गाथार्थ—ये सभी सरोवर नदी के प्रवेश एवं निर्गम द्वारों से सहित हैं तथा इन सरोवरों के परिवार आदि कमलों का वर्णन पद्मद्रह के सदृश ही हैं किन्तु सरोवर स्थित कमलों के गृहों में नागकुमारी देवियाँ निवास करती हैं।।६५८।।

विशेषार्थ—दोनों नदियों के प्रवाह के बीच में सरोवर हैं और इन सरोवरों की वेदिकाएँ हैं, जो नदी के प्रवेश और निर्गम द्वारों से युक्त हैं। इन सरोवरों के परिवार कमलों का वर्णन पद्मद्रह के परिवार कमलों के सदृश ही हैं। विशेषता केवली इतनी है कि इन कमलों पर स्थित गृहों में नागकुमारी देवियाँ सपरिवार निवास करती हैं।

गाथार्थ—उन सरोवरों के दोनों तटों पर पाँच-पाँच काञ्चन पर्वत हैं, जिनका उदय, भूव्यास और मुखव्यास क्रमशः सौ योजन, सौ योजन और पचास योजन प्रमाण है। ये सभी पर्वत ह्रदाभिमुख अर्थात् ह्रदों के सम्मुख हैं। इन पर्वतों के शिखरों पर पर्वत सदृश नाम एवं शुकसदृश कान्ति वाले देव निवास करते हैं।।६५९।।

छह कुलाचलों के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

(जम्बूद्वीपपण्णत्ति ग्रंथ से[1])

गिरिवरकूडेसु तहा गिरिवरसिहरेसु गिरिवरणगेसु।
होंति सुराणं पुरवर जिणभवणविहूसिया रम्मा।।६७।।
विक्खंभायामेहि य उच्छेहेहि य हवंति जावदिया।
वेदड्ढणगम्मि तहा तावदिया अंबुजेसु गिहा।।६८।।
पउमो य महापउमो तिगिंछवरकेसरी य पुंडरिओ।
तह य महापुंडरिओ महादहा होंति अचलेसु।।६९।।
दहकुंडणगणदीण य वणदीवपुराण कूडसेढीणं।
तडवेदी णिद्दिट्ठा मणितोरणमंडिया दिव्वा।।७०।।
सेलाणं उच्छेहो दसगुणिद दहाण होइ आयामा।
दसमजिदे अवगाहं पंचगुणं हवइ विक्खंभं।।७१।।

छह कुलाचलों के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

पर्वतों के कूटों पर, पर्वत शिखरों पर तथा पर्वत नगों पर भी इसी प्रकार जिनभवनों से विभूषित एवं रमणीय देवों के उत्तम भवन होते हैं।।६७।।

जितना विष्कम्भ, आयाम और उत्सेध वैताड्ढ्य पर्वत पर स्थित गृहों का है उतना ही वह कमलों पर स्थित गृहों का भी है।।६८।। पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केसरी, पुण्डरीक और महापुण्डरीक, ये महाद्रह उक्त कुलाचलों पर स्थित हैं।।६९।।

द्रह, कुण्ड, पर्वत, नदी, वन, द्वीप, पुर, कूट और विद्याधर श्रेणियों के मणितोरणों से मण्डित दिव्य तटवेदियाँ कही गई हैं।।७०।।

पर्वतों के उत्सेध को दश से गुणित करने पर द्रहों का आयाम, उसमें दश का भाग देने पर उनका अवगाह और पाँच से गुणित करने पर उनका विस्तार होता है।।७१।।

(**उदाहरण—**हिमवान् पर्वत का उत्सेध यो. १००; १००×१०=१००० योजन उसके ऊपर स्थित पद्मद्रह का आयाम। १००÷१०=१० योजन उक्त द्रह का अवगाह।

---

१. जम्बूद्वीपपण्णत्ति, पृ. ३८ से ४४ तक।

उच्छेहं पंचगुणं विक्खंभं हवइ दुगुण आयामं।
पण्णासेण विभत्तं विक्खंभं हवइ अवगाहं।।७२।।
आयामो दु सहस्सं विक्खंभं पंचजोयणसदाणि।
हिमगिरिसिहरिदहाणं दुगुणा दुगुणा परं तत्तो।।७३।।
मज्झे दहस्स पउमा बे कोसा उट्ठिदा जलंतादो।
चत्तारि य वित्थिण्णा मज्झे अंते य दो कोसा।।७४।।
वेरुलियविमलणालं एयारसहस्सपत्तवरणिचिदं।
सिरिणिलयं णववियसिय दहमज्झे होइ बोद्धव्वा।।७५।।
तस्स वरपउमकलिया वेरुलियकवाडतोरणदुवारं।
कूडागारमहारिहवाघारियफुल्लवरदामं ।।७६।।
कोसं आयामेण य कोसद्धं होदि चेव वित्थिण्णं।
देसूणएक्ककोसं उच्छेहो तस्स भवणस्स।।७७।।

१००×५=५०० योजन उसका विस्तार)

उत्सेध को पाँच से गुणित करने पर द्रहों का विस्तार और उससे दूना उनका आयम होता है। विस्तार प्रमाण को पचास से विभक्त करने पर उनके अवगाह का प्रमाण होता है।।७२।।

(उदाहरण-हिमवान् का उत्सेध यो. १००; १००×५=५०० योजन पद्मद्रह का विस्तार। ५००×२=१००० योजन उसका आयाम। विस्तार योजन ५००; ५००÷५०=१० योजन उसका अवगाह।)

हिमवान् और शिखरी पर्वतों पर स्थित द्रहों का आयाम एक हजार योजन और विष्कम्भ पाँच सौ योजन प्रमाण है। इसके आगे महाहिमवान् और रुक्मि (आदि) पर्वतों पर स्थित द्रहों का आयाम व विष्कम्भ उत्तरोत्तर दूना-दूना है।।७३।।

द्रह के मध्य में जल से दो कोश ऊँचा तथा मध्य में दो कोश व अन्त में दो (१+१) कोश, इस प्रकार से चार कोश विस्तीर्ण कमल है।।७४।।

उक्त कमल वैडूर्यमणिमय निर्मल नाल और ग्यारह हजार उत्तम पत्रों से युक्त है। द्रह के मध्य में नवविकसित (कमल के ऊपर) श्री देवी का गृह है।।७५।।

उत्तम कमलकलिका के ऊपर स्थित उक्त भवन का द्वार वैडूर्यमणिमय कपाटों व तोरणों से युक्त तथा कूटागार (शिखराकार गृह) व बहुमूल्य लम्बी उत्तम पुष्पमालाओं से सहित है।।७६।।

वह भवन एक कोश आयाम वाला, अर्ध कोश विस्तीर्ण और देशोन (पादोन) एक कोश (३/४) ऊँचा है।।७७।।

सिरिहिरिधिदिकित्ति तहा बुद्धी लच्छी य देवकण्णाओ।
एदेसु दहेसु सदा वसंति फुल्लेसु पउमेसु।।७८।।
दक्खिणदहपउमाणं सोहम्मिंदस्स होंति देवीओ।
उत्तरदहवासिणीओ ईसाणिंदस्स बोद्धव्वा।।७९।।
णीलुप्पलणीसासा अहिणवलावण्णरूवसंपण्णा।
दंसणसुहवसुहार णिम्मलवरकणयसंकासा।।८०।।
सुकुमारपाणिपादा आहरणविहूसिया मणभिरामा।
कोइलमहुरालावा कलगुणविण्णाणसंपण्णा।।८१।।
हंसबहुगमणदच्छा पीणोरुपओहरा धवलणेत्ता।
संपुण्णचंदवयणा णववियसियकमलगंधड्ढा।।८२।।
सुकुमारवरसरीरा भिण्णंजणणिद्धणीलवरकेसा।
वियडणियंबमणोहरथणभरभज्जंतवरमज्झा।।८३।।
पलिदोवमाउठिदिया विज्जाहरसुरणराण मणखोहा।
पउमेसु समुप्पण्णा महिलाधम्मेण उप्पण्णा।।८४।।
सिरियादीदेवीणं परिवारगणारण पउमवरभवणा।
लक्खं चत्तसहस्सा सदं च पण्णरस परिसंखा।।८५।।

द्रहों में फूले हुए इन कमलों पर सदा श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी, ये देवकन्याएँ निवास करती हैं।।७८।। दक्षिण द्रहों के पद्मों पर स्थित देवियाँ सौधर्म इन्द्र की और उत्तर द्रहों में निवास करने वाली देवियाँ ईशान इन्द्र की जानना चाहिए।।७९।। पद्मों पर उत्पन्न ये देवियाँ नीलोत्पल के समान निश्वास वाली, अभिनव लावण्यमय रूप से सम्पन्न, देखने में सुभग व सुखकर, निर्मल एवं उत्तम सुवर्ण के सदृश प्रभा वाली, सुकुमार हाथ-पैरों वाली आभरणों से विभूषित, मन को अभिराम, कोयल के समान मधुरभाषिणी; कलाओं, गुणों एवं विज्ञान से सम्पन्न, हंसवधू (हंसी) के समान गमन में दक्ष, स्थूल जंघा व पयोधरों से सहित, घवल नेत्रों वाली, सम्पूर्ण चन्द्र के समान मुख से सहित, नव विकसित कमल के गंध से व्याप्त, सुकुमार उत्तम शरीर वाली, भिन्न अंजन के समान स्निग्ध उत्तम नीले केशों वाली, विशाल नितम्ब एवं मनोहर स्तनों के भार से भंग होने वाले मध्य भाग से संयुक्त, एक पल्योपम प्रमाण आयु स्थिति से संयुक्त, विद्याधर, देव एवं मनुष्यों के मन को क्षोभित करने वाली होती हैं।।८०-८४।।

श्री आदि देवियों के परिवारगणों के कमलों पर स्थित उत्तम भवन एक लाख चालीस हजार एक सौ पन्द्रह (१४०११५) हैं।।८५।।

सव्वाणं देवीणं तिण्णेव हवंति ताण सुरपरिसा।
सत्ताणीया य तहा देवा वररूवसंपण्णा।।८६।।
अब्भंतरपरिसाणं आइच्चो सुरवरो हवे पमुहो।
बहुविहदेवसमग्गो ओलग्गइ सददकालं सो।।८७।।
संणद्धबद्धकवओ उप्पीलियसारपट्टिया मज्झे।
धणुफहसत्तिहत्थो सूरसमत्थो मदिपगब्भो।।८८।।
पजलंतमहामउओ वरहारविहूसिओ विउलवच्छो।
कडिसुत्तकडयकोंडलवत्थादिअलंकियसरीरो।।८९।।
करवालकोंतकप्परणाणाविहपहरणेहिं हत्थेहिं।
तियसेहि समाजुत्तो आणं सिरसा पडिच्छेइ।।९०।।
बत्तीससहस्साणं देवाणं सामिओ महासत्तो।
अच्छरबहुपरिवारो भिच्चो सो पउमदेवीए।।९१।।
दक्खिणपुव्वदिसाए तस्स दु भवणाणि होंति दहमज्झे।
बत्तीससहस्साहं य पउमिणिमज्झम्मि णेयाणि।।९२।।

सब देवियों के तीन सुरपरिषत् तथा उत्तम रूप से सम्पन्न सात अनीक देव होते हैं।।८६।।

अभ्यन्तर पारिषदों का प्रमुख आदित्य नामक उत्तम देव होता है। वह बहुत प्रकार के देवों से युक्त होकर सतत काल (श्री देवी की) सेवा करता है।।८७।।

वह आदित्य देव युद्ध के लिए तत्पर होकर कवच को बांधे हुए, मध्य में कसकर श्रेष्ठ पट्टिका को बांधने वाला, हाथ में धनुष, पटा (या धनुषफलक) एवं शक्ति को लिए हुए, शूरों में समर्थ, मतिप्रगल्भ (बुद्धिमान) प्रकाशमान महामुकुट से सहित, उत्तम हार से विभूषित, विशाल वक्षस्थल से संयुक्त ; तथा कटिसूत्र, कटक, कुण्डल एवं वस्त्रादि से अलंकृत शरीर से युक्त होकर हाथों में तलवार कुन्त, खप्पर एवं अन्य नाना प्रकार के आयुधों से युक्त हाथों वाले देवों (अंगरक्षकों) से युक्त होकर आज्ञा को सिर से ग्रहण करता है।।८८-९०।।

बत्तीस हजार देवों का स्वामी, महाबलवान् और अप्सराओं के बहुत परिवार से सहित वह पद्मवासिनी श्री देवी का भृत्य (सेवक) है।।९१।।

द्रह के भीतर दक्षिण-पूर्व दिशा (आग्नेय) में पद्मिनियों के मध्य में उसके बत्तीस हजार भवन जानना चाहिए।।९२।।

मज्झिमपरिसाण पहू चंदो णामेण णिग्गयपयाओ।
चालीससहस्साणं देवाणं होइ सो राया।।९३।।
वरमउडकुंडलधरो उत्तममणिरयणपवरपालंबो।
कडिसुत्तकणयकंठावरहारविहूसियसरीरो ।।९४।।
असिपरसुकणयमुग्गरभुसुंढिमुसलादिसाउहकरेहि।
देवेहि समाजुत्तो ओलग्गइ साणुराएण।।९५।।
दक्खिणदिसाविभागे भवणाणि हवंति तस्स जलमज्झे।
चालीससहस्साणि य दरवियसियकमलगब्भेसु।।९६।।
बाहिरपरिसाहिवई जदु त्ति णामेण णिग्गयपयावो।
अडदालीससुराणं सहस्सगुणिदाण सो सामी।।९७।।
पजलंतवरतिरीडो णाणामणिविप्फुरंतमणिमउडो।
आलुलियधवलणिम्मलचलंतमणिकुंडलाभरणो।।९८।।
कोदंडदंडसव्वलभिंडीवालादियाहि हत्थाहि।
असुरेहिं समाजुत्तो अच्छइ आणं पडिच्छंतो।।९९।।

मध्यम पारिषदों का प्रभु प्रतापीचन्द्र नामक देव है जो चालीस हजार देवों का स्वामी होता है।।९३।।

उत्तम मुकुट व कुण्डलों का धारक, उत्कृष्ट मणि एवं रत्नों के श्रेष्ठ प्रालंब (गले का भूषणविशेष) से सहित, कटिसूत्र, कटक, कंठा और उत्तम हार से विभूषित शरीर वाला वह चन्द्रदेव असि, परशु, बाण, मुद्गर, भुशुण्डि एवं मूसल आदि आयुधों से युक्त हाथों वाले देवों से युक्त होकर अनुरागपूर्वक श्री देवी की सेवा करता है।।९४-९५।।

उसके दक्षिण दिशा भाग में जल के मध्य में किंचित् विकसित कमलों के मध्य में चालीस हजार भवन हैं।।९६।।

बाह्य परिषदों का अधिपति जो प्रापी जतु नामक देव है, वह अड़तालीस हजार देवों का स्वामी होता है।।९७।।

प्रकाशमान उत्तम किरीट से सहित, नाना मणियों से दैदीप्यमान उत्तम मणिमय मुकुट से अलंकृत, आलोडित धवल निर्मल एवं चंचल मणिमय कुण्डलरूप आभरणों से सुशोभित वह जतु नामक प्रधान देव कोदण्ड, दण्ड, शर्वल (कुन्त, वर्छा या सव्वल) और भिन्दिपाल आदि अस्त्रों से युक्त हाथों वाले देवों से युक्त हो कर आज्ञा की प्रतीक्षा करता हुआ स्थित रहता है।।९८-९९।।

दक्खिणपच्छिमकोणे भवणाणि हवंति तस्स सरमज्झे।
अडदालीसाणि तहा सहस्सगुणिदाणि कमलेसु।।१००।।
गयवरतुरयमहारहगोवइगंधब्वणट्टदासा य।
सत्ताणीया णेया सत्ताहिं कछाहिं संजुत्ता।।१०१।।
उत्तुंगदंतमुसला अंजणगिरिसंणिभा महाकाया।
महुपिंगणयणजुयला सुरिंदधणुसंणिभा पट्ठा।।१०२।।
पगलंतदाणगंडा वियडघढा गुलुगुलं तंगज्जंता।
हत्थिघडाणं सेण्णं सत्तहि भागेहि संजुत्तं।।१०३।।
पढमे भागम्मि गया जे दिट्ठा ते हवंति दुगुणा दु।
बिदिए भागे णेया गयसेण्णं होइ देवाणं।।१०४।।
एवं दुगुणा दुगुणा सत्त विभागा समासदो णेया।
सत्तण्हं अणियाणं एसेव कमो मुणेयव्वो।।१०५।।
वग्गंततुरंगेहि य वरचामरमंडिएहिं दिव्वेहिं।
अस्साणं वरसेण्णं सत्तहि भागेहि णिद्दिट्ठं।।१०६।।

सरोवरों के बीच दक्षिण पश्चिम कोण में कमलों पर उसके अड़तालीस हजार भवन हैं।।१००।।

उत्तम गजेन्द्र, तुरग, महारथ, गोपति (वृषभ), गन्धर्व, नर्तक और दास, ये सात कक्षाओं से संयुक्त सात सेनाएँ जानना चाहिए।।१०१।।

उपर्युक्त गजराज उन्नत दांत रूपी मूसलों से सहित, अंजनगिरि के सदृश, महाकाय, मधु जैसे पीतवर्ण नेत्रों से युक्त, इन्द्रधनुष के सदृश पृष्ठ वाले, गण्डस्थलों से बहते हुए मद से संयुक्त तथा विशाल हाथियों के समूह में गुल-गुल गर्जना करने वाला हस्ति सैन्य सात भागों से युक्त होता है।।१०२-१०३।।

देवों की हस्तिसेना के जितने हाथी पहले भाग में कहे गये हैं, उनसे दूने व द्वितीय भाग में जानना चाहिए। इस प्रकार देवों की गजसेना आगे-आगे के भागों में दूनी-दूनी होती जाती है।।१०४।।

इस प्रकार संक्षेप से सात विभाग दूने-दूने जानना चाहिए। सातों अनीकों का यही क्रम जानना चाहिए।।१०५।।

उत्तम चामरों से मण्डित होकर गमन करते हुए दिव्य तुरंगों से अश्वों की उत्तम सेना सात भागों से युक्त निर्दिष्ट की गई है।।१०६।।

मणिरयणमंडिएहि य पडायणिवहेहिं धवलछत्तेहिं।
सत्तहिं कच्छेहिं तहा रहवरसेण्णं वियाणाहि।।१०७।।
ककुदखुरसिंगलंगुलभासुरकाएहि दिव्वरूवेहिं।
सत्तविभागेहि तहा गोवइसेण्णं वि णिद्दिट्ठं।।१०८।।
महुरेहि मणहरेहि य सत्तस्सरसंजुदेहि गिज्जंतं।
गंधब्वाणं सेण्णं सत्तहि कच्छेहि संजुत्तं।।१०९।।
अदिसयरूवाण तहा आभरणविहूसिदाण देवाणं।
णच्चणगायणसेण्णं सत्तहि भागेहि णिद्दिट्ठं।।११०।।
दासीदासेहि तहा वंठादियविविहरूवभिच्चेहि।
होइ तह दाससेण्णं सत्तहि कच्छाहि संजुत्तं।।१११।।
पच्छिमदिसाविभागे सरवरमज्झम्मि सररुहेसु तहा।
सत्तेव व वरगेहा सत्ताणीयाण णिद्दिट्ठा।।११२।।
सामाणिओ सुरिंदो आभरणविहूसिओ परमरूवो।
चत्तारिसहस्साणं देवाणं अहिवई धीरो।।११३।।

मणि एवं रत्नों से मण्डित पताका समूहों और धवला छत्तों से युक्त सात कक्षा वाली रथों की सेना जानना चाहिए।।१०७।।

ककुद, खुर, सींग और पूँछ से शोभायमान शरीर वाले तथा दिव्यरूप से युक्त बैलों की सेना भी सात विभागों से युक्त कही गई है।।१०८।।

मधुर व मनोहर सात स्वरों से संयुक्त गाती हुई गन्धर्वों की सेना सात कक्षाओं से युक्त होती है।।१०९।।

अतिशय रूप वाले तथा आभरणों से विभूषित नर्तकों व गायकों की सेना सात भागों से युक्त कही गई है।।११०।।

दासी-दासों तथा वंठ (वामन) आदि विविध प्रकार के स्वरूप वाले भृत्यों से संयुक्त दासों की सेना सात कक्षाओं से युक्त होती है।।१११।।

सरोवर के बीच पश्चिम दिशा-भाग में कमलों के ऊपर सात अनीकों के सात ही उत्तम गृह निर्दिष्ट किये गये हैं।।११२।।

आभरणों से विभूषित, धीर और उत्तम रूप वाला सामानिक सुरेन्द्र चार हजार देवों का अधिपति होता है।।११३।।

संपुण्ण वंदवयणो पलंबबाहू य सत्थसव्वंगो।
णीलुप्पलणीसासो अहिणवकणियारसंकासो।।११४।।
पच्छिमउत्तरभागे उत्तरभागे य पुव्वउत्तरदो।
तह चत्तारिसहस्सा तस्स गिहा होंति पउमेसु।।११५।।
दिव्वामलदेहधरा दिव्वाभरणेहि भूसियसरीरा।
मणिगणजलंतमउडा वरकुंडलमंडियागंडा।।११६।।
सिंहासणमज्झगया वरचामरविज्जमाण बहुमाणा।
धवलादवत्तचिण्हा चदुदेवसहस्सपरिवारा।।११७।।
सिरिदेविपादरक्खा चउरो य हवंति तेजसंपण्णा।
बहुविहजोहसमग्गा ओलग्गंता परिचरंति।।११८।।
भवणाणि ताण हुंति हु चदुसु वि य दिसासु पउमफुल्लेसु।
पत्तेयं पत्तेयं चदुरो चदुरो सहस्साणि।।११९।।
कुंदेंदुसंखहिमचयणिम्मलवरहारभूसियावच्छा।
मणिगणकरओहामियदिणयरकरकुंडलाभरणा।।१२०।
अट्ठोत्तरसयसंखा पडिहारा मंतिणो य दूदा य।
बहुपरिवारा धीरा उत्तमरूवा विणीदा य।।१२१।।

उक्त सुरेन्द्र पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाला, लम्बे बाहुओं से सहित, स्वस्थ सब अवयवों से सुशोभित, नीलोत्पल के समान निश्वास से युक्त और नवीन कनेरपुष्प के सदृश होता है।।११४।। पश्चिम-उत्तर भाग (वायव्य), उत्तर भाग तथा पूर्व-उत्तर भाग (ईशान) में पद्मों के ऊपर उसके चार हजार गृह हैं।।११५।। दिव्य व निर्मल देह के धारक, दिव्य आभरणों से भूषित शरीर वाले, मणिसमूह से चमकते हुए मुकुट से शोभायमान, उत्तम कुण्डलों से मण्डित कपोलों से संयुक्त, सिंहासन के मध्य में स्थित, उत्तम चामरों से वीज्यमान, बहुमानी, धवल आतपत्ररूप चिन्ह से सहित, चार हजार परिवार देवों से संयुक्त, श्री देवी के चरणों की रक्षा करने वाले, तेजस्वी तथा बहुत प्रकार के योद्धाओं से सहित वे देव श्री देवी की सेवा करते हुए परिचर्या करते हैं।।११६-११८।। उनमें से प्रत्येक के चारों दिशाओं में कमल पुष्पों के ऊपर चार-चार हजार भवन हैं।।११९।। कुन्दपुष्प, चन्द्रमा एवं हिमसमूह के समान स्वच्छ उत्तम हार से भूषित वक्षस्थल वाले, मणिसमूह की किरणों से सूर्य किरणों को तिरस्कृत करने वाले कुण्डलों से अलंकृत, बहुत परिवार वाले, धीरे, उत्तम रूप से युक्त और विनय को प्राप्त हुए ऐसे एक सौ आठ प्रतिहार, मंत्री व दूत होते हैं।।१२०-१२१।।

भवणाणि ताण दिट्ठा दहमज्झे होंति पउमगब्भेसु।
अट्ठोत्तराणि णेया सदाणि दिसविदिसभागेसु।।१२२।।
सव्वाणि वरघराणि य तोरणपायारसरवरादीणि।
पउमिणिसंडाणि तहा अणाइणिहणाणि जाणाहि।।१२३।।
भवणाणि वि णायव्वा कंचणमणिरयणवज्जमइयाणि।
गल्लिंदणीलमरगयदिणयरससिकिरणणिवहाणि।।१२४।।
भवणेसु तेसु णेया पुव्वक्कयसुकयकम्मजोगेण।
उप्पज्जंति हु देवा देवीओ दिव्वरूवाओ।।१२५।।
एयं च सयसहस्सा चालीससहस्स होंति णिद्दिट्ठा।
एयं च सयं णेया सोलस कमलाण परिसंखा।।१२६।।
विक्खंभुच्छेहादी पउमाणं दुगुणदुगुणवड्ढी दु।
हिमवंतादो णेया जाव दु णिसहो गिरिंदो य।।१२७।।
जंबूदुमेसु एवं परिसंखा होंति जंबुगेहाणं।
णवरि विसेसो जाणे चत्तारिदुमाहिया जंबू।।१२८।।
जंबूदुमाहिवस्स दु चत्तारि हवंति तस्स महिसीओ।
चत्तारि जंबुगेहा देवीणं होंति णिद्दिट्ठा।।१२९।।

द्रह के मध्य में दिशा-विदिशा भागों में पद्मों के बीच में उनके एक सौ आठ भवन निर्दिष्ट किये गये जानना चाहिए।।१२२।। सब उत्तम घर, तोरण, प्राकार, सरोवरादिक तथा पद्मिनीखण्ड अनादि निधन हैं, ऐसा जानिए।।१२३।। ये भवन सुवर्ण, मणि, रत्न एवं वज्र से निर्मित और इन्द्रनील, मरकत, सूर्यकांत व चन्द्रकांत मणियों के समूह से संयुक्त हैं।।१२४।। उन भवनों में पूर्वकृत पुण्य कर्म के योग से दिव्यरूप वाले देव और देवियाँ उत्पन्न होती हैं।।१२५।।

उन कमलों की संख्या एक लाख चालीस हजार एक सौ सोलह (१+३२०००+४००००+४८०००+७+४०००+१६०००+१०८= १,४०,११६) जानना चाहिए।।१२६।।

हिमवान् से लेकर निषध पर्वत पर्यन्त कमलों के विष्कम्भ व उत्सेधादिक में दुगुणी-दुगुणी वृद्धि जानना चाहिए।।१२७।। इसी प्रकार जम्बूवृक्षों के ऊपर जम्बूगृहों की भी संख्या है। यहाँ केवल इतना विशेष जानना चाहिए कि जम्बूवृक्ष चार वृक्षों से अधिक हैं।।१२८।। जो देव जम्बूवृक्ष का अधिपति है, उसकी चार पट्टदेवियाँ हैं। उन देवियों के चार जम्बूवृक्ष निर्दिष्ट किये गये हैं।।१२९।।

सीता-सीतोदा नदी के सरोवरों के कमलों में जिनमंदिर

गंतूण णीलगिरिदो अड्ढादिज्जा सहस्स दक्खिणदिसाए।
सीदाए सरि मज्झे पंचदहा होंति णायव्वा[1]।।२६।।
दसजोयणावगाढा आयामा जोयणा सहस्साणि।
पंचसदा वित्थारा पंचसदा अंतरेक्केक्का।।२७।।
तह णीलवंतपवरो उत्तरकुरुदहवरो दु चंदसरो।
एरावयविउलदहो पंचम दह मालवंतो य।।२८।।
वरसुरहिगंधसलिला णीलुप्पलकमलकुवलयसणाहा।
रंगंतवरतरंगा संखिंदुमुणालसंकासा।।२९।।
रयणमयवेदिणिवहा मणितोरणमंडिया परमरम्मा।
उववणकाणणसहिया महादहा होंति णायव्वा।।३०।।
तेसु मणिरयणकमला बे कोसा उट्ठिया जलंतादो।
चत्तारि य वित्थिण्णा मज्झे अंतेसु दो कोसा।।३१।।

सीता-सीतोदा नदी के सरोवरों के कमलों में जिनमंदिर

नीलगिरि से दक्षिण दिशा में अढ़ाई हजार (१०००+१००+५००) योजन जाकर सीता सरित् के मध्य में पाँच द्रह जानना चाहिए।।२६।।

एक-एक द्रह दश योजन गहरे, एक हजार योजन लम्बे, पाँच सौ योजन विस्तृत और पाँच सौ योजन के अंतराल में स्थित हैं।।२७।।

नीलवान् द्रह, उत्तरकुरु द्रह, चन्द्र द्रह, ऐरावत द्रह और पाँचवां माल्यवान् नामक, इस प्रकार ये उन विशाल द्रहों के नाम हैं।।२८।।

ये महाद्रह उत्तम सुगंधित जल से परिपूर्ण, नीलोत्पल, कमल और कुवलय पुष्पों से सनाथ चलती हुई उत्तम तरंगों से संयुक्त शंख, चन्द्रमा एवं मृणाल के सदृश, रत्नमय वेदिका समूह से युक्त मणिमय तोरणों से मण्डित, अतिशय रमणीय और वन-उपवनों से सहित हैं, ऐसा जानना चाहिए।।२९-३०।।

उन द्रहों में जल से दो कोश ऊँचे, मध्य में चार और अन्त में दो कोश विस्तीर्ण, वैर्डूयमय निर्मल नाल से सहित, सुगंध गंध से युक्त, अतिशय रमणीय और ग्यारह

१. जम्बूद्वीपपण्णत्ति पृ. १०२ से ११३ तक।

वेरुलियविमलणाला सुगंधगंधुद्धुदा परमरम्मा।
एयारसेहि गुणिदा सहस्सदलसंजुदा दिव्वा।।३२।।
कमलेसु तेसु भवणा कोसायामा तदद्धवित्थारा।
उभयद्ध होंति तुंगा कंचणमणिरयणपरिणामा।।३३।।
चउचउसहस्स कमला चउसु वि दिसासु होंति णायव्वा।
बत्तीससहस्साइं अग्गिदिसाए हवे कमला।।३४।।
दक्खिणदिसाविभागे चालीससहस्स होंति कमलाणि।
णेरिदियदिसाभागे अडदालसहस्स णिद्दिट्ठा।।३५।।
पच्छिमदिसाविभागे सत्तेव हवंति पउमपुप्फाणि।
अट्ठुत्तरसयकमला परिवेढे सव्वदो होंति।।३६।।
चत्तारि सहस्साइं उत्तरईसाणवाउदेसेसु।
रुंभित्ता होंति तहा दरवियसियकमलकुसुमाणि।।३७।।
णीलकुमारीणामा उत्तरचंदाकुमारि तह णामा।
एरावयाकुमारी तह पच्छा मालवंती दु।।३८।।
णागकुमारीयाओ एदाओ हवंति कमलभवणेसु।
पलिदोवमाउगाओ दसधणुउत्तुंगदेहाओ।।३९।।

हजार पत्रों से संयुक्त दिव्य मणिमय एवं रत्नमय कमल हैं।।३१-३२।।

उन कमलों पर एक कोश आयत, इससे आधे विस्तृत और उभय अर्थात् आयाम व विस्तार के सम्मिलित प्रमाण से आधे (पौन कोश) ऊँचे, ऐसे सुवर्ण, मणि एवं रत्नों के परिणामरूप भवन हैं।।३३।। उक्त द्रहों में चारों दिशाओं में चार-चार हजार और अग्नि दिशा में बत्तीस हजार कमल जानना चाहिए।।३४।। दक्षिण दिशा भाग में चालीस हजार और नैऋत्य दिशा भाग में अड़तालीस हजार कमल निर्दिष्ट किये गये हैं।।३५।।

पश्चिम दिशा भाग में सात ही कमल पुष्प हैं तथा परिवेष (मण्डल) में अर्थात् प्रत्येक दिशा में चौदह-चौदह और प्रत्येक विदिशा में तेरह-तेरह, इस प्रकार एक सौ आठ कमल हैं।।३६।।

तथा उत्तर, ईशान और वायु दिशा भागों को रोककर किंचित् विकसित चार हजार कमल कुसुम हैं।।३७।। कमल भवनों में पल्योपम प्रमाण आयु की धारक और दश धनुष उन्नत देह वाली नीलकुमारी, उत्तरकुमारी, चन्द्रकुमारी, ऐरावतकुमारी तथा माल्यवन्ती नामकी ये देवियाँ स्थित हैं।।३८-३९।।

जह हिमगिरिदहकमले सिरिदेविसुराण होंति परिसंखा।
तह सीदादहवासिणिदेवीणं होंति परिसंखा।।४०।।
एक्केक्कम्मि दहम्मि दु कमलाणि हवंति सयसहस्सं च।
एगं चत्तसहस्सा सयं च तह सोलसा अहिया।।४१।।
सत्तेव होंति लक्खा छच्चेव सया य तह य वीसूणा।
भवणाणि वि तावदिया णायव्वा होंति णियमेण।।४२।।
सव्वेसु य कमलेसु य जिणवरपडिमा हवंति णायव्वा।
वरपाडिहेरसहिया णाणामणिरयणसंपण्णा।।४३।।
ओमणसस्स य भवरे विज्जुप्पहणामयस्स पुव्वेण।
मंदरदक्खिणवासे देवकुरू होइ णायव्वा।।८१।।
एक्को य चित्तकूडो विचित्तकूडो य पव्वदो पवरो।
एक्कं च कंचणसयं णियमा तत्थ दु मुणेयव्वा।।८२।।
णिसधद्दहो य पढमो देवकुरुदहो तहेव बिदिओ य।
सूरद्दहो य णेया सुरसद्दह विज्जुतेओ य।।८३।।
पंचेव जोयणसदा वित्थिण्णा दस य होंति उव्वेधा।
जोयणसहसायामा सव्वदहा होंति णायव्वा।।८४।।

जिस प्रकार हिमगिरि संबंधी द्रह के कमल पर स्थित श्री देवी के परिवार देवों की संख्याएँ हैं उसी प्रकार सीताद्रहवासिनी देवियों के भी परिवार देवों की संख्याएँ हैं।।४०।।

एक-एक द्रह में एक लाख चालीस हजार एक सौ सोलह कमल होते हैं (१६०००+३२०००+४००००+४८०००+७+१०८+४०००+१=१४०११६)।।४१।।

(उक्त पाँचों द्रहों में) सात लाख और बीस कम छह सौ अर्थात् पाँच सौ अस्सी कमल (१४०११६×५=७००५८०) और उतने ही भवन भी जानना चाहिए।।४२।।

सब ही कमलों पर उत्तम प्रतिहार्यों से सहित और नाना मणियों एवं रत्नों से सम्पन्न जिनेन्द्र प्रतिमाएँ होती हैं।।४३।।

विद्युत्प्रभ नामक गजदंत के पूर्व और मन्दर गिरि के दक्षिण-पार्श्व भाग में देवकुरु स्थित है।।८१।। वहाँ नियम से एक चित्रकूट व दूसरा विचित्रकूट ये दो श्रेष्ठ यमक पर्वत तथा एक सौ कंचन पर्वत जानना चाहिए।।८२।।

प्रथम निषध द्रह, द्वितीय देवकुरु द्रह, सूर द्रह, सुरस (सुलस) द्रह और विद्युत्तेज, ये पाँच द्रह जानना चाहिए। सब द्रह पाँच सौ योजन विस्तीर्ण, दश योजन उद्वेध से सहित और एक हजार योजन आयत जानना चाहिए।।८३-८४।।

सीतोदापणदीए तत्थ दहा पंच होति णायव्वा।
मेरुस्स सामलीओ दक्खिणपच्छिमे होइ।।८५।।
तस्सेव य उच्चत्तं णायव्वा भट्ठ जोयणाणं तु।
णामेण वेणुदेवो तत्थ य गरुडाहिवो वसइ।।८६।।
उत्तरदिसाविभागं गंतूणं जोयणाणि पंचसदा।
जमगेहिंतो परदो महादहा होंति सरिमज्झे।।११८।।
वरवेदिएहिं जुत्ता तोरणदारेहि मंडिया दिव्वा।
अक्खयअगाहतोया पंचेव य होंति णायव्वा।।११९।।
एक्केक्काणं अंतर पंचेव हवंति जोयणसयाणि।
तेवीसा बादाला बे चेव कला य मेरुस्स।।१२०।।
तेसीदा बादाला बे चेव कला य होइ परिमाणं।
दहमेरूणं अंतर णादव्वं होइ जिणदिट्ठं।।१२१।।
पुव्वावरवित्थिण्णा पंचेव हवंति जोयणसयाणि।
उत्तरदक्खिणभागे सहस्समेयं वियाणाहि।।१२२।।
पायालम्मि पइट्ठे दसजोयण वण्णिया समासेण।
पप्फुल्लकमलकुवलयणीलुप्पलकुमुदसंछण्णा।।१२३।।

ये पाँच द्रह वहाँ सीतोदा के प्रणिधि भाग में जानना चाहिए। मेरु के दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) में शाल्मलि वृक्ष है।।८५।। उसकी ऊँचाई आठ योजन प्रमाण जानना चाहिए। वहाँ पर वेणुदेव नामक गरुड़कुमारों का अधिपति निवास करता है।।८६।।

यमक पर्वतों से आगे उत्तर दिशाविभाग में पाँच सौ योजन जाकर नदी के मध्य में महा द्रह हैं।।११८।। उत्तम वेदियों से युक्त, तोरणद्वारों से मण्डित, दिव्य और अक्षय अगाध जल से परिपूर्ण वे द्रह पाँच ही होते हैं, ऐसा जानना चाहिए।।११९।।

एक-एक द्रह का अन्तर पाँच सौ योजन है। तेईस ब्यालीस व दो कला मेरु का है।।१२०।। तेरासी ब्यालीस व दो कला प्रमाण, यह जिन भगवान के द्वारा देखा गया द्रह और मेरु का अन्तर जानना चाहिए।।१२१।।

उक्त द्रह पूर्व-पश्चिम में पाँच सौ योजन प्रमाण विस्तीर्ण हैं। उत्तर-दक्षिण भाग में इनका विस्तार एक हजार योजन प्रमाण जानना चाहिए।।१२२।।

प्रफुल्लित कमल, कुवलय, नीलोत्पल और कुमुदों से व्याप्त वे द्रह पाताल में प्रविष्ट होने पर दश योजन अवगाह से युक्त हैं। इस प्रकार संक्षेप से उनका वर्णन किया गया है।।१२३।।

तेसु वरपउमपुप्फा विक्खंभायाम जोयणपमाणा।
बाहल्लेण य कोसा जलादु बे उण्णया कोसा।।१२४।।
वरकण्णिया दुकोसा कोसपमाणा हवंति तह पत्ता।
णालाण रुंद कोसा दसजोयण साहिया दीहा।।१२५।।
वेरुलियरयणणाला कंचणवरकण्णिया य णायव्वा।
विद्दुमपत्तेयारससहस्सगुणिदा समुद्दिट्ठा।।१२६।।
दिव्वामोदसुगंधा णववियसियपउमकुसुमसंकासा।
पउम त्ति तेण णामा जिणिंदइंदेहिं णिद्दिट्ठा।।१२७।।
एयं च सयसहस्सं चालीसा तह सहस्ससंगुणिदा।
एयं च सयं सोलस पउमाणं होंति परिसंखा।।१२८।।
सत्तेव सयसहस्सा पंचसया तह असीदा य।
पंचण्हं तु दहाणं परिमाणं हुंति पउमाणं।।१२९।।
जिणइंदवरगुरूणं सुरिंदवरघिट्ठमउडचलणाणं।
रयणमया वरपडिमा पउमिणिपुप्फेसु णिद्दिट्ठा।।१३०।।

उनमें एक योजन प्रमाण विष्कम्भ व आयाम तथा एक कोश बाहल्य से सहित और जल से दो कोश ऊँचे उत्तम कमल पुष्प हैं।।१२४।।

इनकी उत्तम कर्णिका दो कोश और पत्र एक कोश प्रमाण हैं। नालों का विस्तार एक कोश और दीर्घता दश योजन से अधिक है।।१२५।।

इनके नाल वैडूर्यमणिमय और कर्णिकाएँ सुवर्णमय जानना चाहिए। उनके विद्रुममय पत्ते ग्यारह हजार कहे गये हैं।।१२६।।

चूँकि उक्त (पार्थिव) कमल दिव्य आमोद से सुगंधित और नवीन विकसित पद्म कुसुम के सदृश हैं, इसीलिए जिनेन्द्र भगवान के द्वारा इनके नाम पद्म निर्दिष्ट किये गये हैं।।१२७।।

पद्मों की संख्या एक लाख चालीस हजार एक सौ सोलह (१४०११६) है।।१२८।।

पाँचों द्रहों के कमलों का प्रमाण सात लाख पाँच सौ अस्सी (१४०११६×५=७००५८०) है।।१२९।।

पद्मिनि पुष्पों पर, जिनके चरणों में श्रेष्ठ सुरेन्द्रों ने अपने मुकुट को घिसा है अर्थात् नमस्कार किया है, ऐसी श्रेष्ठ जिनेन्द्र गुरुओं की रत्नमय उत्तम प्रतिमाएँ निर्दिष्ट की गई हैं।।१३०।।

तेसु पउमेसु णेयं कंचणमणिरयणसंवैसंछण्णा।
लंबंतकुसुममाला कालागरुकुसुमगंधड्ढा।।१३१।।
धुव्वंतधयवडाया मुत्तादामेहिं सोहिया रम्मा।
गोउरकबाडजुत्ता मणिवेदिविहूसिया दिव्वा।।१३२।।
गाउअदलविक्खंभा गाउवदीहा दहाण पउमेसु।
गाउयवउभागूणा उत्तुंगा होंति पासादा।।१३३।।
णिसधकुमारी णेया तह चेव य देवकुरुकुमारी य।
सूरकुमारी सुलसा विज्जुप्पह तह कुमारी य।।१३४।।
एदाओ णामाओ णागकुमाराणा वरकुमारीओ।
एगपल्लाउगाओ दसधणुउउत्तुंगदेहाओ।।१३५।।
णिच्चं कुमारियाओ आहेणबलावण्णरूवजुत्ताओ।
आहरणभूसियाओ मिदुकोमलसहुरवयणाओ।।१३६।।
तेसु भवणेसु णेया देवीओ होंति चारुरूवाओ।
धम्मेणुप्पण्णाओ वि सुद्धसीलस्सभावाओ।।१३७।।
देवीण तिण्णि परिसा सत्ताणीया हवंति णायव्वा।
तह आदरक्खअसुरा सामाणीया य सुरसंघा।।१३८।।

द्रहों के उन कमलों पर सुवर्ण, मणि एवं रत्नों के समूह से व्याप्त, लटकती हुई कुसुमलताओं से सहित, कालागरु व कुसुमों की गंध से युक्त, फहराती हुई ध्वजा-पताकाओं से संयुक्त, मुक्तामालाओं से शोभित, रमणीय, गोपुरकपाटों (गोपुरद्वारों) से युक्त, मणिमय वेदियों से विभूषित, दिव्य, अर्ध कोश विस्तृत, एक कोश दीर्घ और चतुर्थ भाग से हीन एक (३/४) कोश ऊँचे प्रासाद हैं।।१३१-१३३।।

निषधकुमारी, देवकुरुकुमारी, सूरकुमारी, सुलसाकुमारी तथा विद्युत्प्रभकुमारी नामक ये नागकुमारों की उत्तम कुमारियाँ एक पल्य प्रमाण आयु वाली और दस धनुष उन्नत देह की धारक हैं।।१३४-१३५।।

उन भवनों में सदा कुमारी रहने वाली ये देवियाँ अभिनव लावण्यमय रूप से संयुक्त, आभरणों से भूषित, मृदु, कोमल एवं मधुर वचनों को बोलने वाली, सुन्दर रूप से सहित और विशुद्ध शील व स्वभाव से सम्पन्न होती हैं।।१३६-१३७।।

इन देवियों के तीन पारिषद, सात अनीक तथा आत्मरक्षक देवों एवं सामानिक देवों के समूह होते हैं, ऐसा जानना चाहिए।।१३८।।

तिण्णेव य परिसाणं धूमदिसे सीहसाणभागेसु।
होंति भवणाणि णेया पफुलपउमेसु सव्वेसु।।१३९।।
बत्तीसा चालीसा अडदाला तह सहस्ससंगुणिदा।
परिसंखा णिद्दिट्ठा समासदो ताण सव्वाणं।।१४०।।
धयसीहवसहगयवरदिसासु पउमाणि होंति रक्खाणं।
पत्तेयं पत्तेयं चदुरो चदुरो सहस्साणि।।१४१।।
सामाणियाण वि तहा खरगजढंखेसु चदुसहस्साणि।
सत्त पउमाणि णेया सत्ताणीयाण वसहम्मि।।१४२।।
धयधूमसिंहमंडलगोवइखरणागढंखआसासु।
होंति पउमाणि णेया सदं च अट्ठाणि देवाणं।।१४३।।
एक्केक्काण दहाणं दोदोपासेसु पुव्वपच्छिमदो।
कंचणसेला दस दस णायव्वा होंति रमणीया।।१४४।।

तीनों पारिषद देवों के भवन आग्नेय, दक्षिण और ईशान भागों में स्थित सब विकसित पद्मों के ऊपर होते हैं।।१३९।।

उन सबकी संख्या संक्षेप से क्रमशः बत्तीस हजार, चालीस हजार और अड़तालीस हजार निर्दिष्ट की गई है।।१४०।।

ध्वजा, सिंह, वृषभ और गज दिशाओं (पूर्वादिक चारों) में से प्रत्येक दिशा में आत्मरक्षक देवों के चार-चार हजार कमल हैं।।१४१।।

तथा सामानिक जाति के देवों के भी चार हजार कमल खर, गज और ढंख अर्थात् काक (ईशान, उत्तर व वायव्य) दिशाओं में है। सात अनीकों के सात कमल वृषभ (पश्चिम) दिशा में जानना चाहिए।।१४२।।

ध्वजा, धूम, सिंह, मण्डल, गोपति (वृषभ), खर, नाग (गज) और ढंख (ध्वाङ्क्ष) इन आठ दिशाओं में (प्रतीहार, मंत्री व दूत) देवों के एक सौ आठ पद्म जानना चाहिए।।१४३।।

प्रत्येक द्रह के पूर्व व पश्चिम दो-दो पार्श्वभागों में रमणीय दस-दस कंचन शैल जानना चाहिए।।१४४।।

हिमवान आदि पर्वतों के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

(लोकविभाग ग्रंथ से)

सहस्रमायतः पद्मस्तदर्धमपि विस्तृतः।
योजनानि दशागाढे हिमवन्मूर्धनि ह्रदः।।८३।।
।१०००।
महापद्मोऽथ तिगिंच्छः केसरी च महानपि।
पुण्डरीको ह्रदश्चाथ गिरिषु द्विगुणाः क्रमात्।।८४।।
योजनोच्छ्रयविष्कम्भं सलिलादर्धमुद्गतम्।
गव्यूतिकर्णिकं पद्मं तत्र श्री रत्नवेश्मनि।।८५।।
।१/२।
चत्वारिंशच्छतं चैव सहस्राणामुदाहृतम्।
शतं पञ्च दशाग्रं च परिवारः श्रीगृहस्य सः।।८६।।

हिमवान आदि पर्वतों के सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

हिमवान् पर्वत के ऊपर एक हजार (१०००) योजन लम्बा, उससे आधा अर्थात् पाँच सौ (५००) योजन विस्तार वाला और दस (१०) योजन गहरा पद्म नाम का तालाब स्थित है।।८३।।

आगे महाहिमवान् आदि शेष पाँच पर्वतों के ऊपर इससे दूने प्रमाण वाले (उत्तर के तीन दक्षिण के तीन के समान) क्रमशः महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक ये पाँच तालाब स्थित हैं।।८४।।

पद्म ह्रद में एक योजन ऊँचाई व विस्तार वाला, जल से आधा (१/२) योजन ऊँचा और एक कोस विस्तृत कर्णिका से संयुक्त कमल है। इसके ऊपर रत्नमय भवन में श्री देवी का निवास है।।८५।।

श्री देवी के गृह के परिवारस्वरूप वहाँ एक सौ चालीस हजार अर्थात् एक लाख चालीस हजार एक सौ पन्द्रह (१४०११५) अन्य गृह हैं।।८६।।

---

१. लोकविभाग, पृ. ९-१०।

ह्रीर्धृतिः कीर्तिबुद्धी च लक्ष्मीश्चैव ह्रदालयाः।
शक्रस्य दक्षिणा देव्य ईशानस्योत्तरा स्मृताः।।८७।।
।१४०११५।

सीता-सीतोदा नदी के बीस सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

सार्धे सहस्त्रे नीलाद् द्वे नीलनामा ह्रदस्ततः।
कुरुनामा च चन्द्रश्च तस्मादैरावतः परम्।।१४९।।[1]
।२५००।
माल्यवान् दक्षिणो (णे) नद्यां सहस्त्रार्धान्तराश्च ते।
पद्मह्रदसमा मानैरायता दक्षिणोत्तरम्।।१५०।।
।५००।
निषधादुत्तरस्यां च नद्यां तु निषधो ह्रदः।
कुरुनामा च सूर्यश्च सुलसो विद्युदेव च।।१५१।।
रत्नचित्रतटा वज्रमूलाश्च विपुला ह्रदाः।
वसन्ति तेषु नागानां कुमार्यः पद्मवेश्मसु।।१५२।।

आगे महापद्म आदि ह्रदों में क्रम से ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी इन देवियों के भवन हैं। इनमें दक्षिण की देवियाँ (श्री, ह्री और धृति) सौधर्म इन्द्र की और उत्तर की (कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी) देवियाँ ईशान इन्द्र की स्मरण की गई हैं।।८७।।

सीता-सीतोदा नदी के बीस सरोवरों में कमलों में जिनमंदिर

नील पर्वत के दक्षिण में सार्ध दो हजार अर्थात् अढ़ाई हजार (२५००) योजन जाकर नील, कुरु, चन्द्र उसके आगे ऐरावत और माल्यवान् ये पाँच द्रह सीता नदी के मध्य में हैं। ये प्रमाण में पद्मदह के समान होते हुए दक्षिण-उत्तर आयत हैं।। इनके मध्य में पाँच सौ (५००) योजन का अन्तर है।।१४९-१५०।।

निषध पर्वत के उत्तरों में सीतोदा नदी के मध्य में निषध, कुरु, सूर्य, सुलस और विद्युत् नाम के पाँच द्रह हैं।।१५१।।

इन विशाल द्रहों के तट रत्नों से विचित्र हैं। मूल भाग इनका वज्रमय है। उनके भीतर पद्मभवनों में नागकुमारियाँ रहती हैं।।१५२।।

अर्धयोजनमुद्विद्धं योजनोच्छ्रयविस्तृतम्।
पद्मं गव्यूतिविपुला कर्णिका तावदुच्छ्रिता।।१५३।।
चत्वारिंशच्छतं चैव सहस्त्राणामुदाहृतम्।
शतं पञ्चदशाग्रं च परिवारोऽम्बुजस्य सः।।१५४।।
।१४०११५।
तटद्वये ह्रदानां च प्रत्येकं दशसंख्यकाः।
काञ्चनाख्याचलाः सन्ति ते ह्रदाभिमुखस्थिताः।।१५५।।
मेरुगिरिपुव्वदक्खिणपच्छिमये उत्तरम्मि पत्तेक्कं।
सीदासीदोदाये पंच दहा केइ इच्छंति।।४।।
ताणं उवदेसेण य एक्केक्कदहस्स दोसु तीरेसु।
पण पण कंचणसेला पत्तेक्कं होंति णियमेण।।५।।
(ति.पृ. ४, २१३६-३७)

जल से पद्म की ऊँचाई आधा योजन है। वह एक योजन ऊँचा और उतना ही विस्तृत है। उसकी कर्णिका का विस्तार एक कोस तथा ऊँचाई भी उतनी ही है।।१५३।।

उस पद्म के परिवार का प्रमाण एक लाख चालीस हजार एक सौ पन्द्रह (१४०११५) कहा गया है।।१५४।।

द्रहों के दोनों तटों में से प्रत्येक तट पर दस-दस कांचन पर्वत हैं, जो उक्त द्रहों के अभिमुख स्थित हैं।।१५५।।

मेरु पर्वत के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर इनमें से प्रत्येक दिशा में सीता और सीतोदा नदियों के आश्रित पाँच द्रह हैं, ऐसा कितने ही आचार्य मानते हैं। उनके उपदेश के अनुसार प्रत्येक द्रह के दोनों किनारों पर नियम से पाँच-पाँच कांचन पर्वत स्थित हैं।।४-५।।

अर्थात् इस मान्यता के अनुसार सीता-सीतोदा नदी के चारों तरफ ५-५ द्रह होने से बीस द्रह माने जाते हैं।

धातकीखण्ड द्वीप में धातकी वृक्ष के परिवार वृक्षों की संख्या

(तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ से[१])

उत्तरदेवकुरूसुं खेत्तेसुं तत्थ धादईरुक्खा।
चेट्ठंति य गुणणामो तेण पुढं धादईसंडो।।२६००।।
धादइतरूण ताणं परिवारदुमा भवंति एदस्सिं।
दीवम्मि पंचलक्खा सट्ठिसहस्साणि चउसयासीदी।।२६०१।।
५६०४८०।
पियदंसणो पभासो अहिवइदेवा वसंति तेसु दुवे।
सम्मत्तरयणजुत्ता वरभूसणभूसिदायारा।।२६०२।।
आदरअणादराणं परिवारादो भवंति एदाणं।
दुगुणा परिवारसुरा पुव्वोदिदवण्णणेहिं जुदा।।२६०३।।

धातकीखण्ड द्वीप में धातकी वृक्ष के परिवार वृक्षों की संख्या

धातकीखण्डद्वीप के भीतर उत्तरकुरु और देवकुरु क्षेत्रों में धातकीवृक्ष स्थित हैं, इसी कारण इस द्वीप का ''धातकीखण्ड'' यह सार्थक नाम है।।२६००।।

इस द्वीप में उन धातकी वृक्षों के परिवारवृक्ष पाँच लाख साठ हजार चार सौ अस्सी हैं।।२६०१।। ५६०४८०।

उन वृक्षों पर सम्यक्त्वरूपी रत्न से संयुक्त और उत्तम भूषणों से भूषित आकृति को धारण करने वाले प्रियदर्शन और प्रभास नामक दो अधिपति देव निवास करते हैं।।२६०२।।

इन दोनों देवों के परिवारदेव आदर और अनादर देवों के परिवार देवों की अपेक्षा दुगुणे हैं, जो पूर्वोक्त वर्णन से संयुक्त हैं।।२६०३।।

विशेष—इससे यह सिद्ध होता है कि धातकीखण्ड में पद्मसरोवर में श्री देवी के परिवार कमलों की संख्या जम्बूद्वीप से दूनी है। आगे निषध तक दूनी-दूनी हैं ऐसे ही पुष्करार्ध द्वीप में भी हिमवान के पद्मसरोवर में श्री देवी के परिवार कमलों की संख्या धातकीखण्ड से दूनी है, आगे महापद्म व तिगिंछ सरोवर के कमलों की दूनी-दूनी है।

१. तिलोयपण्णत्ति पृ. ४७०-४७१ तक।

धातकीखण्डद्वीप व पुष्करार्धद्वीप में पर्वतों का विस्तार

(लोकविभाग ग्रंथ से[१])

नाम्नान्यो धातकीखण्डो द्वितीयो द्वीप उच्यते।
मेरोः पूर्वपरावत्र द्वौ मेरू परिकीर्तितौ।।१।।
इष्वाकारौ च शैलौ द्वौ मेरोरुत्तरदक्षिणौ।
सहस्त्रं विस्तृतावेतौ द्वीपव्याससमायतौ।।२।।
अवगाढोच्छ्रयाभ्यां च निषधेन समौ मतौ।
सर्वे वर्षधराश्चात्र स्वैः स्वैर्गाधोच्छ्रयैः समाः।।३।।
क्षेत्रस्याभिमुखं क्षेत्रं शैलानामपि चाद्रयः।
इष्वाकारास्तु चत्वारो भरतैरावतान्तरे।।४।।
हिमवत्प्रभृतीनां च पूर्वो द्विगुणे इष्यते।
द्वादशानामपि व्यासस्तथा पुष्करसंज्ञके।।५।।
द्विचतुष्कमथाष्टौ च अष्टौ सप्त च रूपकम्।
धातकीखण्डशैलानां व्यासः संक्षेप इष्यते।।६।।
।१७८४२।

धातकीखण्डद्वीप व पुष्करार्धद्वीप में पर्वतों का विस्तार

दूसरा द्वीप नामसे धातकीखण्ड कहा जाता है। यहाँ मेरु (सुदर्शन) के पूर्व और पश्चिम में दो मेरु कहे गये हैं।।१।। यहाँ पर मेरु के उत्तर और दक्षिण में दो इष्वाकार पर्वत स्थित हैं। ये एक हजार योजन विस्तृत और द्वीप के विस्तार के बराबर (४ लाख योजन) आयत हैं।।२।। ये दोनों इष्वाकार पर्वत अवगाढ़ और ऊँचाई में निषध पर्वत के समान माने गये हैं। यहाँ पर सब पर्वत अपने-अपने अवगाढ़ और ऊँचाई में जम्बूद्वीपस्थ पर्वतों के समान हैं।।३।।धातकीखण्डद्वीप में क्षेत्र के अभिमुख (सामने) क्षेत्र और पर्वतों के अभिमुख पर्वत स्थित हैं। किन्तु चार (दो धातकीखण्ड और दो पुष्करार्ध द्वीप के) इष्वाकार पर्वत भरत और ऐरावत क्षेत्रों के अन्तर में स्थित हैं।।४।। हिमवान् आदिक बारह कुलपर्वतों का विस्तार पूर्व (जम्बूद्वीपस्थ हिमवान् आदि) से दूना माना जाता है। उसी प्रकार पुष्करार्ध नामक द्वीप में भी इन पर्वतों का विस्तार धातकीखण्ड की अपेक्षा दूना है।।५।। धातकीखण्ड में स्थित पर्वतों का विस्तार संक्षेप में अंक क्रम से दो, चार, आठ, आठ, सात और एक (१,७८,८४२) अर्थात् एक लाख अठत्तर हजार आठ सौ ब्यालीस योजन माना जाता है।।६।।

१. लोकविभाग, पृ. ६० से ६२ तक।

गिरयोऽर्धतृतीयस्था द्रुमवक्षारवेदिकाः।
अवगाढा विना मेरुं स्वोच्चयस्य चतुर्थकम्।।१३।।
विस्तृतानि हि कुण्डानि स्वावगाहं तु षड्गुणम्।
ह्रदनद्योऽवगाहाच्च पञ्चाशद्गुणविस्तृताः।।१४।।
६०।१२०।२४०
उद्गतं स्वावगाहं तु चैत्यं सार्धशताहतम्।
जम्ब्वातुल्याः समाख्याता दशाप्यत्र महाद्रुमाः।।१५।।
सरःकुण्डमहानद्यस्तथा पद्मह्रदा अपि।
अवगाहैः समाः पूर्वैर्व्यासैर्द्विर्द्विगुणाः परे।।१६।।

अढ़ाई द्वीप में मेरु पर्वत को छोड़कर शेष जो पर्वत, वृक्ष, वक्षार और वेदिकाएँ स्थित हैं, उनका अवगाढ़ अपनी ऊँचाई के चतुर्थ भाग (१/४) प्रमाण है।।१३।। कुण्डों का विस्तार अपने अवगाह से छह गुणा (जैसे–१०×६=६०, २०×६=१२०, ४०×६=२४०) तथा द्रह और नदियों का विस्तार अपने अवगाह से पचास गुणा है।।१४।। **चैत्यवृक्ष की ऊँचाई अपने अवगाह से डेढ़ सौ गुणी होती है। अढ़ाई द्वीपों में स्थित दस ही महावृक्ष जंबूवृक्ष के समान कहे गये हैं।।१५।। तालाब, कुण्ड, महानदियाँ तथा पद्मह्रद भी ये अवगाह की अपेक्षा पूर्व अर्थात् जम्बूद्वीपस्थ तालाब आदि के समान हैं। परन्तु विस्तार में वे जम्बूद्वीप के तालाब आदि से दूने-दूने हैं।।१६।।**

जम्बूद्वीप में पर्वत व सरोवरों का माप

(१)	हिमवान् पर्वत	पद्म सरोवर	लं. १००० योजन
	(विस्तार–१०५२ १२/१९ योजन)		चौ.–५०० योजन
(२)	महाहिमवान् पर्वत	महापद्म सरोवर	लं.–२००० योजन
	(विस्तार–४२१० १०/१९ योजन)		चौ.–१००० योजन
(३)	निषध पर्वत	तिगिंछ सरोवर	लं.–४००० योजन
	(विस्तार–१६८४२ २/१९ योजन)		चौ.–२००० योजन
(४)	नील पर्वत	केसरी सरोवर	लं.–४००० योजन
	(विस्तार–१६८४२ २/१९ योजन)		चौ.–२००० योजन
(५)	रुक्मि पर्वत	पुण्डरीक सरोवर	लं.–२००० योजन
	(विस्तार–४२१० १०/१९ योजन)		चौ. १००० योजन
(६)	शिखरी पर्वत	महापुण्डरीक सरोवर	लं.–१००० योजन
	(विस्तार–१०५२ १२/१९ योजन)		चौ.–५०० योजन

धातकीखण्डद्वीप में पर्वत व सरोवरों का माप

पूर्व धातकीखण्ड

(१)	हिमवान् पर्वत	पद्म सरोवर	लं.–२००० योजन
	(विस्तार–२१०५ ५/१९ योजन)		चौ.–१००० योजन
(२)	महाहिमवान् पर्वत	महापद्म सरोवर	लं.–४००० योजन
	(विस्तार–८४२१ १/१९ योजन)		चौ.–२००० योजन
(३)	निषध पर्वत	तिगिंछ सरोवर	लं.–८००० योजन
	(विस्तार–३३६८४ ४/१९ योजन)		चौ.–४००० योजन
(४)	नील पर्वत	केसरी सरोवर	लं.–८००० योजन
	(विस्तार–३३६८४ ४/१९ योजन)		चौ.–४००० योजन
(५)	रुक्मि पर्वत	पुण्डरीक सरोवर	लं.–४००० योजन
	(विस्तार–८४२१ १/१९ योजन)		चौ.–२००० योजन
(६)	शिखरी पर्वत	महापुण्डरीक सरोवर	लं.–२००० योजन
	(विस्तार–२१०५ ५/१९ योजन)		चौ.–१००० योजन

पश्चिम धातकीखण्ड में भी उपरोक्त प्रकार की ही रचना है

पुष्करार्ध द्वीप में पर्वत व सरोवरों का माप

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप

(१)	हिमवान् पर्वत	पद्म सरोवर	लं.–४००० योजन
	(विस्तार–४२१० १०/१९ योजन)		चौ.–२००० योजन
(२)	महाहिमवान् पर्वत	महापद्म सरोवर	लं.–८००० योजन
	(विस्तार–१६८४२ २/१९ योजन		चौ.–४००० योजन
(३)	निषध पर्वत	तिगिंछ सरोवर	लं.–१६००० योजन
	(विस्तार–६७३६८ ८/१९ योजन)		चौ.–८००० योजन
(४)	नील पर्वत	केसरी सरोवर	लं.–१६००० योजन
	(विस्तार–६७३६८ ८/१९ योजन)		चौ.–८००० योजन
(५)	रुक्मि पर्वत	पुण्डरीक सरोवर	लं.–८००० योजन
	(विस्तार–१६८४२ २/१९ योजन)		चौ.–४००० योजन
(६)	शिखरी पर्वत	महापुण्डरीक सरोवर	लं.–४००० योजन
	(विस्तार–४२१० १०/१९ योजन)		चौ.–२००० योजन

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप में भी उपरोक्त प्रकार की ही रचना है

जम्बूद्वीप संबंधी कमल

(१) छह कुलाचलों के सरोवरों संबंधी

'श्री' देवी के कुल कमल	-१,४०,११६
'ह्री' देवी के कुल कमल	-२,८०,२३२
'धृति' देवी के कुल कमल	-५,६०,४६४
'कीर्ति' देवी के कुल कमल	-५,६०,४६४
'बुद्धि' देवी के कुल कमल	-२,८०,२३२
'लक्ष्मी' देवी के कुल कमल	-१,४०,११६
कुल कमल	**-१९,६१,६२४**

(२) सीता-सीतोदा नदियों के सरोवरों संबंधी कमल

१,४०,११६×२०=२८,०२,३२०

जम्बूद्वीप संबंधी कुल कमल	**-१९,६१,६२४**
	-२८,०२,३२०
	-४७,६३,९४४

सैंतालिस लाख तिरेसठ हजार नौ सौ चौवालिस कमल

धातकीखण्डद्वीप संबंधी कमल

पूर्व धातकीखण्ड संबंधी कमल

(१) छह कुलाचलों के सरोवरों संबंधी

'श्री' देवी के कुल कमल	-२,८०,२३२
'ह्री' देवी के कुल कमल	-५,६०,४६४
'धृति' देवी के कुल कमल	-११,२०,९२८
'कीर्ति' देवी के कुल कमल	-११,२०,९२८
'बुद्धि' देवी के कुल कमल	-५,६०,४६४
'लक्ष्मी' देवी के कुल कमल	-२,८०,२३२
कुल कमल	**-३९,२३,२४८**

(२) सीता-सीतोदा नदियों के सरोवरों संबंधी कमल

२,८०,२३२×२०=५६,०४,६४०

पूर्व धातकीखण्ड संबंधी कुल कमल	**-३९,२३,२४८**
	-५६,०४,६४०
	-९५,२७,८८८

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप के कुल कमल	**-९५,२७,८८८**
पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप के कुल कमल	**-९५,२७,८८८**
धातकीखण्ड द्वीप के कुल कमल	**-१,९०,५५,७७६**

एक करोड़ नब्बे लाख पचपन हजार सात सौ छियत्तर

पुष्करार्ध द्वीप संबंधी कमल

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधी कमल

(१) छह कुलाचलों के सरोवरों संबंधी

'श्री' देवी के कुल कमल	-५,६०,४६४
'ह्री' देवी के कुल कमल	-११,२०,९२८
'धृति' देवी के कुल कमल	-२२,४१,८५६
'कीर्ति' देवी के कुल कमल	-२२,४१,८५६
'बुद्धि' देवी के कुल कमल	-११,२०,९२८
'लक्ष्मी' देवी के कुल कमल	-५,६०,४६४
कुल कमल	**-७८,४६,४९६**

(२) सीता-सीतोदा नदियों के सरोवरों संबंधी कमल

५,६०,४६४,×२०=१,१२,०९,२८०

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के कुल कमल	**-७८,४६,,४९६**
	-१,१२,०९,२८०
	-१,९०,५५,७७६

पूर्व पुष्करार्धद्वीप के कुल कमल -१,९०,५५,७७६
पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप के कुल कमल -१,९०,५५,७७६
पुष्करार्ध द्वीप के कुल कमल -३,८१,११,५५२
तीन करोड़ इक्यासी लाख ग्यारह हजार पाँच सौ बावन

ढाई द्वीप के कुल कमल

जम्बूद्वीप के कुल कमल =४७,६३,९४४
धातकीखण्ड द्वीप के कुल कमल =१,९०,५५,७७६
पुष्करार्ध द्वीप के कुल कमल =३,८१,११,५५२
=६,१९,३१,२७२

सर्व कमल ६ करोड़ उन्नीस लाख इकतीस हजार दो सौ बाहत्तर हैं।

इन सभी कमलों के जिनमंदिर-जिनप्रतिमाओं को मेरा कोटि-कोटि नमस्कार होवे।

तीर्थंकर माता की सेवा करने वाली श्री आदि देवियाँ

जम्बूद्वीप के हिमवान आदि छह कुलाचलों के पद्म आदि सरोवरों में रहने वाली श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी देवियाँ जम्बूद्वीप के भरत-ऐरावत व विदेह क्षेत्रों में होने वाले तीर्थंकरों की माता की सेवा के लिए आती हैं। ऐसे ही पूर्वधातकीखण्ड के सरोवरों की श्री आदि देवियाँ वहाँ के भरत, ऐरावत और विदेह क्षेत्र में होने वाले तीर्थंकरों की माता की सेवा करती हैं। पश्चिमधातकीखण्ड में वहीं के सरोवरों के कमलों में रहने वाली श्री आदि देवियाँ वहीं के भरत-ऐरावत व विदेह क्षेत्रों में जन्म लेने वाले तीर्थंकरों की माता की सेवा करने जाती हैं। इसी प्रकार पूर्वपुष्करार्ध द्वीप में वहीं के हिमवान आदि पर्वतों के सरोवरों में रहने वाली श्री आदि देवियाँ वहीं पर भरत-ऐरावत व विदेह क्षेत्रों में होने वाले तीर्थंकरों की माता की सेवा करने जाती हैं। ऐसे ही पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप में कुलाचलों के कमलों की श्री आदि देवियाँ वहीं पर भरत-ऐरावत व विदेहों में जन्म लेने वाले तीर्थंकरों की माता की सेवा के लिए जाती हैं। जम्बूद्वीप की देवियाँ धातकीखण्ड व पुष्करार्ध द्वीप में सेवा करने नहीं जाती हैं।

कुछ विद्वान् पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में कह देते हैं कि ये देवियाँ स्वर्गों से आई हैं यह गलत हैं। ये श्री आदि देवियाँ मध्यलोक से ही आती हैं। यह ध्यान रखना है।

जम्बूद्वीप में एक भरत क्षेत्र, एक ऐरावत क्षेत्र व बत्तीस विदेह क्षेत्र हैं। ऐसे ही पूर्व-धातकी-पश्चिमधातकी व पूर्वपुष्करार्ध तथा पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपों में १-१ भरत, १-१ ऐरावत व ३२-३२ विदेह क्षेत्र हैं। इसलिए ढाईद्वीप में ५ भरत, ५ ऐरावत व ३२×५=१६० विदेह क्षेत्र हो जाते हैं। इन ५+५+१६०=१७० कर्मभूमियों में तीर्थंकर भगवान जन्म लेते हैं। जम्बूद्वीप, पूर्व-पश्चिम धातकीखण्ड व पूर्व-पश्चिम पुष्करार्धद्वीप में हिमवान आदि छह-छह सरोवरों में ये देवियाँ रहती हैं। ढाई द्वीप के ये श्री आदि देवियों के सरोवर ६×५=३० ही हैं। यह ध्यान में रखना है।

****

-प्रशस्ति-

वीर अब्द पच्चीस सौ-उनतालिस[१] शुभ जान।
शांति प्रभु केवल तिथी, पौष शुक्ल दश मान।।१।।

कमलों में जिनगृह कहे, अकृत्रिम अभिराम।
उनका वंदन नित करूँ, मिले स्वात्म सुख धाम।।२।।

ग्रंथ सर्वजन मान्य यह, तब तक रहे महान्।
जब तक तीर्थंकर कथित, दयाधर्म गुणखान।।३।।

गणिनी ज्ञानमती कृती, ग्रन्थ संकलन मान्य।
भव्यों को सुख शांतिप्रद, करे सर्वकल्याण।।४।।

।। समाप्तम् ।।

१. सन् २०१३।

कमल, कमल नाल एवं कमल कर्णिका का उत्सेधादि[1]

सरोवरों के कमल	कमलों का उत्सेध	कमलों का व्यास	नाल जलमग्न	नाल जल के ऊपर	कर्णिका का उत्सेध	कर्णिका का व्यास	मृणाल का बाहुल्य
१. पद्म द्रह का कमल	१ यो.	१ यो.	१० यो.	१/२ यो.	१ को.	१ को.	३ को.
२. महापद्म द्रह का कमल	२ यो.	२ यो.	२० यो.	१ यो.	२ को.	२ को.	६ को.
३. तिगिञ्छ द्रह का कमल	४ यो.	४ यो.	४० यो.	२ यो.	४ को.	४ को.	१२ को.
४. केसरी द्रह का कमल	४ यो.	४ यो.	४० यो.	२ यो.	४ को.	१ को.	१२ को.
५. महापुण्डरीक द्रह का कमल	२ यो.	२ यो.	२० यो.	१ यो.	२ को.	२ को.	६ को.
६. पुण्डरीक द्रह का कमल	१ यो.	१ यो.	१० यो.	१/२ यो.	१ को.	१ को.	३ को.

श्री देवी की ७ अनीकों का सम्पूर्ण प्रमाण[2]

गजानीक	अश्वानीक	रथाऽनीक	वृषभानीक	गन्धर्वानीक	नृत्यानीक	पदाति
४०००	४०००	४०००	४०००	४०००	४०००	४०००
८०००	८०००	८०००	८०००	८०००	८०००	८०००
१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००
१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००
२५६०००	२५६०००	२५६०००	२५६०००	२५६०००	२५६०००	२५६०००
५०८०००	५०८०००	५०८०००	५०८०००	५०८०००	५०८०००	५०८०००

योग–३५५६०००

१–२. त्रिलोकसार ग्रंथ, पृ. ४८६, ४८८।

श्री आदि देवियों के भवनों का व्यास आदि एवं परिवार कमलों का प्रमाण[1]

क्रमांक	देवियाँ	भवनों की लम्बाई	भवनों की चौड़ाई	भवनों की ऊँचाई	ईशान–वायव्य कोण में सामानिक देव	चतुर्दिश तनुरक्षक	तीनों पारिषद देव: आग्नेय में अभ्यन्तर पारिषद	तीनों पारिषद देव: दक्षिण में मध्य पारिषद	तीनों पारिषद देव: नैऋत्य में बाह्य पारिषद	पश्चिम में अनीक देव	आठों दिशाओं में प्रतिहार	कुल योग
१	श्री	१ को.	१/२ को.	३/४ को.	४०००	१६०००	३२०००	४००००	४८०००	७	१०८	१४०११५
२	ह्री	२ को.	१ को.	१ १/२को.	८०००	३२०००	६४०००	८००००	९६०००	१४	२१६	२८०२३०
३	धृति	४ को.	२ को.	३ को.	१६०००	६४०००	१२८०००	१६००००	१९२०००	२८	४३२	५६०४६०
४	कीर्ति	४ को.	२ को.	३ को.	१६०००	६४०००	१२८०००	१६००००	१९२०००	२८	४३२	५६०४६०
५	बुद्धि	२ को.	१ को.	१ १/२ को.	८०००	३२०००	६४०००	८००००	६६०००	१४	२१६	२८०२३०
६	लक्ष्मी	१ को.	१/२ को.	३/४ को.	४०००	१६०००	३२०००	४००००	४८०००	७	१०८	१४०११५

१. त्रिलोकसार ग्रंथ, पृ. ४९०।